www.faithbook.in

Faithbook™
ACTIVITIES BEYOND BOOK

4th OCT 2020
Issue 06

BOOK 018

Humans are like

tea bags

They never realize their strength
until they are put in

hot water

॥ वंदामि जिणे चउव्व सं ॥

॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरणा

पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक

नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

ज्ञान खजाना, बड़ा सुहाना

सादर प्रणाम,

विश्व में ज्ञान विविध स्वरूप में उपलब्ध हो सकता है, किंतु सम्यक् ज्ञान की उपलब्धता सद्गुरु के मार्गदर्शन से ही शास्त्रों व ग्रंथों द्वारा होती है। शास्त्र पंक्तियों की गहराइयों तक पहुँचने की क्षमता हमारे भीतर भिन्न-भिन्न मात्रा में हो सकती है। अतः शास्त्रवचनो को आसान भाषा में सब तक पहुँचाने का महद्कार्य अनेक महात्माओं द्वारा अद्वितीय लेखों के माध्यम से अविरत किया जा रहा है।

Faithbook के माध्यम से इस माह का विविध विषयों से भरपूर ज्ञान खजाना फिर एकबार प्रस्तुत करते हुए आनंद हो रहा है।

आप यह वाचन करके ज्ञानानंद की अनुभूति करें और अपनों को भी करवाऐ।

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

दुष्प्रवृत्तियों में हमें बदबू का अहसास क्यों नहीं होता? **01**
पू. आ. श्री विजय अभयशेखर सूरिजी म.सा.

उज्झितक कथा – 3 **05**
पू. आ. श्री महाबोधि सूरिजी म.सा.

प्रभु की अंतर्लीन और औचित्यपूर्ण अवस्था **14**
पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

Secret of Work **16**
पू. मु. श्री अक्षयकीर्ति विजयजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline **18**
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

जिनशासन को हार्ट-अटैक **21**
प्रियम्

विशुद्धि चक्र ध्यान **24**
पू. मु. श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

सोशियल मिडीया पर शासन निंदा **27**
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

नमस्कार अणगार को... **30**
पू. मु. श्री तीर्थबोधी विजयजी म.सा.

जिसको पुष्ट किया, वो ही हमें पीस रहा हैं। **32**
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 4 **33**
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

प्रतिकार

दुष्प्रवृत्तियों में हमें बदबू का अहसास क्यों नहीं होता?

पूज्य आचार्य श्री विजय अभयशेखर सूरिजी म.सा.

एक्स्ट्रा प्लॉट में कचरा एकत्र हो गया हो तो उसकी बुरी असर बंगले पर होती हुई स्पष्ट दिखाई देती है। रोज मिलने वाले दो-चार घण्टे के खाली समय का उचित प्लान न होने के कारण वह कचरा बन जाता है और उसका प्रभाव बाकी के 20-22 घण्टों में क्या पड़ता है? पिछले लेख में पूछे गए इस प्रश्न पर हम चर्चा-विचार कर रहे हैं।

पिछले अंक में हमने देखा कि देरासर में भी नजर पवित्र नहीं रहने के भी अनुभव हुए हैं। अब हम कुछ अन्य अनुभवों की बात देखेंगे।

(2) अच्छी-अच्छी आराधना करने वाली बहनें, मासक्षमण, वर्षीतप और उपधान तप जैसी तपस्या करने वाली बहने भी कैसी वेश-भूषा धारण करती है? शरीर अधिक से अधिक खुला दिखे, अंगोपांगों के आकार स्पष्ट दिखे ऐसे कपड़े? 'पुरुष हमें देखे तो उसकी आँख में विकार उठना ही चाहिए। तुम हमें घूरते जाओ और पाप बाँधते जाओ, घूरते जाओ... पाप बाँधते जाओ...', मानो पाप की पुड़िया की प्रभावना करने ही निकले हों। क्या यह कीचड़ की गन्दी बदबू नहीं?

प्रश्न: महाराज साहेब ! इन सबमें हमें बदबू का अहसास क्यों नहीं होता?

उत्तर: एक राजा एक सन्त का बड़ा भक्त था। वह बार-बार उन्हें अपने महल में स्थिरता करने के लिए आग्रह करता था, किन्तु सन्त मना कर देते थे। एक बार अत्यधिक आग्रह के कारण सन्त ने सात दिन महल में रुकने की सहमति दी। सन्त पधारे, राजा ने पूरा महल सजाया, एक दिन गुजरा और रात भी बीती। दूसरे दिन सुबह-सुबह वे सन्त किसी को बिना बताए महल से वापिस अपनी झोंपड़ी में लौट आए। जैसे ही राजा को पता चला तो वह भागकर तुरन्त सन्त के पास गया और बोला, "स्वामी जी ! क्या मुझसे कोई भूल हुई? आप सात दिन की बजाय एक ही दिन में क्यों लौट गए?"

"राजन ! आपकी कोई भूल नहीं थी किन्तु मुझे भयंकर बदबू आ रही थी, इसलिए मैंने राजमहल छोड़ दिया।" यह सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ, उसने सोचा कि राजमहल में तो चारों ओर तोरण, पुष्पमालाएँ और फूलों के गुलदस्ते लगे हुए थे, हर तरफ इत्र छिड़का हुआ था।
इस झोंपड़ी में तो ऐसा कुछ

नहीं है, बल्कि पास में बहती गटर की बदबू तो यहाँ आ रही है, फिर भी स्वामी जी को यहाँ बदबू नहीं आ रही, राजमहल में आ रही है? ऐसा क्यों? राजा ने स्वामी जी को पूछा, "स्वामी जी ! हमें तो राजमहल में कोई बदबू नहीं आई?'

बात का मर्म समझाने के लिए सन्त राजा को मछलीमारों की बस्ती में लेकर गए। अभी तो बस्ती में पैर भी नहीं रखा था, कि राजा चिल्लाया, "कितनी भयानक बदबू है, मेरा तो सर फटा जा रहा है। मैं तो यहाँ से जा रहा हूँ।"

सन्त बोले, "ये मछलीमार तो मस्ती से अपना-अपना कार्य कर रहे हैं, इन्हें बदबू क्यों नहीं आ रही?"

राजा : "ये तो जन्म से यहीं रह रहे हैं, इन्हें तो आदत हो गई, इसलिए इन्हें बदबू कैसे आएगी?"

सन्त : "राजन् ! आप भी जन्म से ही राजमहल में रह रहे हैं, इसलिए आपको भी बदबू नहीं आई। चारों ओर रंगबिरंगे खुशबूदार फूल, धूप, इत्र, गीत-संगीत, नृत्य, विविध भित्तिचित्र, सज-धज कर निकली राजकुमारियाँ, उनकी सखियाँ, दासियाँ..! राजन् ! मैं तो इन सबसे त्रस्त हो गया। क्या इन्द्रियों की गुलामी में बदबू नहीं है?"

यही स्थिति आप सबकी है। घर से बाहर, हर जगह, पूरा दिन आप लोग लड़कियों के कामोत्तेजक कपड़े, पोस्टर्स, टीवी, मोबाइल में ऐसे दृश्य आदि देखते रहते हैं, इसलिए आपको इन सबमें दुर्गन्ध नहीं आती, किन्तु हम तो इसमें त्राहि पुकार उठते हैं। मात्र हम संयमियों को ही नहीं, बल्कि हर सद्गृहस्थ को भी इन सबमें भयानक बदबू का अहसास होता है।

रावण ने सीता का अपहरण किया, उस समय सीता की खोज चल रही थी। रस्ते में गिरे हुए कुछ आभूषण मिले। ये आभूषण सीता के ही थे या किसी अन्य स्त्री के, इसका निर्णय करना था। राम तो मूर्च्छित थे, इसलिए आभूषण लक्ष्मण को दिखाए गए। उस समय पता है लक्ष्मण ने क्या कहा? मैं माता सीता के कुण्डल, हार आदि कुछ भी नहीं पहचानता, क्योंकि मेरी नजर उन आभूषणों पर कभी नहीं गई। लेकिन हाँ ! उनकी पायल जरूर पहचानता हूँ, क्योंकि उनके चरणों में नमन करते समय पायल अवश्य दिखाई देती है। वर्षों के वनवास में मात्र राम, सीता और लक्ष्मण ही थे, **लक्ष्मण का नेत्र संयम कैसा अद्भुत रहा होगा?** यही सज्जनता है, यही सद्गृहस्थ की

निशानी है और यही सदाचार की पराकाष्ठा है। **आज एक बहुत बड़ा वर्ग दृष्टि दोष का सेवन करता है, किन्तु मात्र इससे यह पाप खत्म नहीं होता, इसकी गंध सुगन्ध नहीं बन जाती।**

आपकी पत्नी, बहन या बेटी को यदि कोई गन्दी नजर से देखे, तो क्या आपको बुरा नहीं लगता? यदि आप किसी Function में अपनी पत्नी के साथ गए, जहाँ 500-700 लोग हाजिर हैं और वहाँ कोई रूपवती स्त्री आपकी नजर को भा गई। आप एकटक उसे देख रहे हैं। यह बात आपकी पत्नी देख ले तो, "कुछ शर्म-वर्म है कि नहीं? क्या देख रहे हो?" वो आपको ऐसा बोलेगी न? तो

समझ जाइए कि परस्त्री को विकारी दृष्टि से देखना बगीचे की सुगन्ध नहीं बल्कि कचरे की बदबू है।

अपने शरीर का पर-पुरुष "स्पर्श" द्वारा उपभोग करे, ऐसी स्त्री को दुराचारिणी कहा जाता है, तो फिर अपने शरीर और रूप का पर-पुरुष "चक्षु" द्वारा उपभोग करे, ऐसी व्यवस्था करके देने वाली स्त्री को दुराचारिणी क्यों नहीं कह सकते ? और इसी दृष्टिकोण से उस पुरुष को भी दुराचारी क्यों नहीं कह सकते? दुराचार तो दुर्गन्ध ही होता है न? याद रहे, कि ये सब Extra Plot में Planning के अभाव में इकट्ठा हुए कचरे की ही बुरी असर है।

(3) अनावश्यक या कम जरूरी चीजों की अंधा-धुंध खरीदी, या जो चीज अच्छे से काम कर रही हो, खराब न हुई हो फिर भी उसे Replace करके Latest और अधिक आकर्षक चीज की खरीदी आदि बेकार के खर्च आजकल बहुत बढ़ गए हैं। इन सबके कारण सुकृत के अवसर पर हाथ तंग हो जाते हैं। पहले के समय में एक परिवार के महीने के खर्च में 80% खर्च खाने-पीने का और 20% अन्य खर्च होता था। अब तो पूरा बजट बिगड़ गया है, क्योंकि इन सब फालतू के खर्चों के कारण खाने-पीने पर बजट का 30-40% और बाकी का 60-70% हिस्सा अन्य खर्चों का हो गया है।

याद रखिए कि पिछले 1000 वर्षों में मनुष्य की LifeStyle इतनी नहीं बदली जितनी पिछले 100 वर्षों में बदल गई है। और पिछले 100 वर्षों में जितनी नहीं बदली उतनी पिछले 10 वर्षों में बदल गई है, आजकल तो 1-1 वर्ष में सब कुछ बदल रहा है। Updated रहने के लिए हर वर्ष मोबाइल बदलो, चश्मा बदलो, ड्रैस बदलो... और पता नहीं इस List में और कितनी चीजें हैं। 2-3 साल हो गए, टू-व्हीलर बदलो, कार बदलो, टीवी में विज्ञापनों का इतना ढेर होता है कि इच्छा जागृत हुए बिना नहीं रहती। 4-5 वर्ष हुए नहीं, कि घर का इंटीरियर बदलो...

ये सब कोई 5-10 हजार रुपयों का खेल नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों की बाते हैं। फिर इतना कमाने के लिए उल्टे-सीधे धन्धे करो, गलत साहस करो, और कहीं फंस गए तो टेंशन, डिप्रेशन, सुसाइड। बहुत हाथ-पैर मारने के बाद भी कमाई नहीं कर पाए, तो इच्छाएँ पूरी न होने के कारण मन-ही-मन गुस्सा होना, पत्नी के ताने सुनना कि तुम्हें तो काम-धन्धा करना ही नहीं आता आदि। क्योंकि उसकी सहेलियों की सारी इच्छाएँ तो पूरी हो रही होती है। फिर रोज के लड़ाई-झगड़े और संक्लेश...!

इसके बदले Extra Plot में सद्-वांचन का उद्यान बनाया होता तो पूरी विचारधारा अलग ही होती, उपभोग-वाद के बदले सन्तोषवाद होता,

दुःखद कम्पेरिजन के बदले सुखद कम्पेरिजन होता। अर्थात् खुद से अधिक सम्पत्ति वाले के साथ तुलना करके हीनता अनुभव करने की बजाय, जिसके पास अपने से भी कम है उनसे तुलना करके 'मुझे तो बहुत कुछ मिला है' इसका आनन्द अनुभव किया जाता। **When we don't have what we like, we must like what we have.** इस वाक्य के अनुसार जो भी मिला है उसका आनन्द ही आनन्द होता।

साथ ही सत्श्रवण और सद्वांचन के द्वारा यदि कर्म विज्ञान समझ आ गया तो दुनिया में ऐसी कोई ताकत नहीं, जो जीव को दुःखी कर सके, या जीव को टेंशन, डिप्रेशन की ओर धकेल सके। पूर्व में किए गए पाप हमारे सामने मुश्किलें खड़ी कर सकते हैं, प्रतिकूलताएँ खड़ी कर सकते हैं, कष्ट उपस्थित कर सकते हैं, किन्तु जीव के पास यदि कर्म विज्ञान का कवच हो जीव को दुःखी या दीन-हीन नहीं बना सकते। **याद रखिए, कि दुःखों का पहाड़ टूट पड़े फिर भी दुःखी होना या न होना, यह जीव के हाथ में ही होता है, कर्मसत्ता के हाथ में नहीं।**

किन्तु ढेरों दुःखों के बीच भी दुःखी न होने की, दुःखमुक्त रहने की कला टीवी, मोबाइल या सोसाइटी की बैठक नहीं सिखाती, सद्गुरु का सत्संग सिखाता है।

(4) कीचड़ की बदबू का निर्णय करने का सरल उपाय :

क्या कोई भी व्यक्ति अपना मोबाइल अपने माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन किसी के लिए भी Surprise Checking के लिए खुला रख सकता है? कोई निजी बात हो, उसे छोड़िए, लेकिन वह मोबाइल में क्या-क्या Download करता है? क्या देखता और सुनता है? किसके साथ सम्पर्क रखता है? किसके साथ Chating करता है? आदि... आदि। ये सब Delete नहीं करना है, और माता-पिता आदि कोई भी मेरा मोबाइल Check करना चाहे, उसे पूरी छूट है, कभी भी कर सकते हैं।

जो लोग ऐसी छूट नहीं दे सकते, संकोच होता है, शर्म आती है, कोई चीज Delete करके या कुछ App को Lock करके मोबाइल देते हैं, वे निर्णय कर सकते हैं कि यह सब दो घण्टे के Extra Time में अंधाधुंध खड़े किए गए कीचड़ की बदबू है।

(5) अभी कुछ ही दिन पहले घटित घटना :

महाराष्ट्र के उस्मानाबाद में 20 वर्षीय युवक इंजिनीरिंग की पढ़ाई करता था। Extra Time में मोबाइल की शरण थी। एक बार किसी पाकिस्तानी लड़की से सम्पर्क हुआ, बात आगे बढ़ी, वो लड़की बनी लैला और ये बना मजनूँ। 'किसी भी तरीके से मेरी लैला से मिलूँ' यह तड़प जगी। कोरोना में न कोई ट्रैन, न बस, कुछ नहीं। साइकिल चलाकर उस्मानाबाद से सोलापुर पहुँचा, वहाँ से टू व्हीलर लेकर, जैसे-तैसे पुलिस से बचकर सरहद तक पहुँचा। रेगिस्तान में टू व्हीलर नहीं चलता, इसलिए पैदल ही निकला लेकिन आर्मी के हाथों पकड़ा गया।

कचरे की ऐसी दुर्गन्ध तो रोज-रोज अख़बारों में पढ़ने को मिलती ही है।

दो घण्टों से बाईस घण्टे सुगन्धित रह सकते हैं या फिर दुर्गन्ध से भर सकते हैं, यह बात ऊपर लिखी बातों से निःशंक रूप से स्पष्ट कर लेने की सब को प्रेरणा है। और अधिक अगले अंक में...

उज्झितक कथा – 3

पूज्य आचार्य श्री महाबोधि सूरिजी म.सा.

इस प्रकार उज्झितक पूरी तरह अनाथ हो गया। पहले पिता मृत्यु को प्राप्त हुए। पिता के साथ धन का एक बड़ा हिस्सा चला गया। फिर मां भी चली गई। मां के साथ जो कुछ भी बचा था घर आदि, वह सब भी चला गया। अब तो उसके लिए नीचे धरती, ऊपर आकाश जैसी स्थिति हो गई। इन परिस्थितियों में न तो स्वजनों ने उसका साथ दिया, न ही मित्रें ने।

अकेला, अनाथ, निराधार, असहाय बन चुका उज्झितक वाणिज्यग्राम के गलियों और चौराहों पर भटकने लगा। कभी आश्रयगृहों में तो कभी राजमार्गों पर। जिस प्रकार बिना छत के घर सुरक्षित नहीं होता, उसी प्रकार मां-बाप की अनुपस्थिति में बालक निरंकुश बन जाता है। उज्झितक को भी कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था। वह पूरी तरह से स्वच्छंद हो गया। इस पर भी कड़वा करेला नीम पर चढ़ने सदृश गलत मित्रें का साथ। इन सभी कारणों से वह चोरी, जुआ, वेश्यागमन, परस्त्रीगमन जैसे कुव्यसनों में पूरी तरह लिप्त हो गया। चोरी और जुए से जो भी धन प्राप्त होता, उसे वह वेश्यागमन में लुटा देता। कारण, नगर की कामध्वजा नामक वेश्या के पीछे वह अनहद पागल बन चुका था।

कामध्वजा वाणिज्यग्राम नगर की अत्यंत रूप-वती गणिका थी। वह नारी की 72 कलाओं और गणिका के 64 गुणों से परिपूर्ण थी। उसके शरीर

का प्रत्येक अवयव सुडौल और आकर्षक था। जब वह सोलह श्रृंगार कर अपने भवन में प्रवेश करती तो साक्षात कामदेव की पत्नी रति के आगमन का आभास होता। इसके रूप, सौंदर्य, नृत्य और गीत की बराबरी करने वाली पूरे वाणिज्यग्राम में दूसरी गणिका नहीं थी। उसके विलास भवन पर ऊंची ध्वजा लहराती रहती है, जो हजारों काम-रसिकों को मौन आमंत्रण देती है। इसके साथ एक रात्रि व्यतीत करने का मूल्य एक हजार स्वर्ण-मुद्रा थी।

नगर में गमनागमन के लिए कामध्वजा के पास सुन्दर लाक्षणिक अश्वों से युक्त कर्णरथ नामक रथ था। उसके संरक्षण में हजारों गणिकाएं थीं, जो कामध्वजा के निर्देश पर काम करती थी। नगर के राजा ने प्रसन्न होकर उसे छत्र, चंवर आदि भेंट किया था। संक्षेप में कहें तो, कामध्वजा राजमान्य गणिका थी।

उज्झितक इस कामध्वजा वेश्या के रूप के पीछे पागल बना हुआ दिन-रात उसके पैरों में ही पड़ रहता था। वह उसके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता था। वह कामध्वजा के साथ मनुष्य लोक में रहते हुए दिव्य सुखों के आनन्द का आस्वादन करता रहता। इसके लिए उज्झितक हजारों-लाखों स्वर्णमुद्रायें खर्च कर चुका था।

विजयमित्र इस वाणिज्यग्राम नगर का राजा था। राजा विजयमित्र बलवान और रूपवान श्रीमंत था। उसकी पत्नी का नाम था श्रीदेवी। श्रीदेवी अपने आप में रूप और सौंदर्य का अक्षय भंडार थी। राजा और रानी के बीच अनहद प्रेम था। इस प्रकार भोग-सुखों के आनन्द में समय बीत रहा था।

पूर्वकृत असाता वेदनीय कर्म का उदय हुआ। रानी श्रीदेवी योनिशूल नामक रोग से ग्रस्त हो गई। रोग से वह सतत पीड़ा में रहने लगी। संसार के किसी भी सुख में उसे रस नहीं रहा। पीड़ा की इस अवस्था में राजा विजयमित्र रानी के साथ भोगोपभोग नहीं कर सकता था। राजा को सांसारिक भोगों से वैराग्य भी नहीं था, अपितु भोग सुखों के लिए उसकी कामना तीव्रतर होती जा रही थी। रानी श्रीदेवी से उसे भोग सुख मिलना असंभव था। अतः राजा कामपूर्ति के लिए कामध्वजा गणिका के यहां जाने के लिए उद्यत हुआ।

गणिका भवन में प्रवेश करते समय राजा को समाचार मिला कि उज्झितक दिन-रात काम-ध्वजा के पीछे पागल बना पड़ा रहता है। राजा ने विचार किया कि यह व्यक्ति मेरे सुख में बाधक बनेगा। राजा के आदेश से अंगरक्षकों ने उज्झितक को अपमानित कर भवन से निकाल बाहर किया। उज्झितक के जाने पर राजा को शांति का अनुभव हुआ। वह कामध्वजा के साथ निश्चिंत होकर मनुष्य लोक का उत्कृष्ट भोग-सुख का उपभोग करने लगा।

इस प्रकार निकाले जाने पर उज्झितक शरीर से कामध्वजा से दूर हो गया, किन्तु मन तो सदैव कामध्वजा में ही रमण करता रहा। उसे दिन-रात कामध्वजा के ही विचार उद्वेलित करते रहते। उस कामध्वजा के बिना एक क्षण का जीवन उज्झितक को 100 वर्ष के बराबर लग रहा था। कामध्वजा के विरह में उसके मन की सुख-शान्ति खो गई। किसी पागल की भांति वह 'कामध्वजा' का नाम लेकर बड़बड़ाता रहता। तात्पर्य यह कि वह मन, वचन, काया से कामध्वजा के प्रति समर्पित हो चुका था।

ऐसी स्थिति में उसके मन में एक ही विचार चलता

रहा कि मैं क्या करूं, जिससे कि मैं पुनः काम-ध्वजा के साथ विषय-सुखों का वर्तन कर सकूं। वह गणिका भवन के आसपास चक्कर लगाता रहता, इस उम्मीद के साथ कि क्या पता, भवन में प्रवेश का कोई गुप्त मार्ग मिल जाए और वह अंदर प्रवेश कर सके।

आखिर एक दिन उसे कामध्वजा के गणिका भवन में प्रवेश का गुप्तद्वार मिल ही गया। उसने गुप्तद्वार से भवन में प्रवेश किया तो कामध्वजा ने मीठी मनुहार के साथ उसका स्वागत किया। उज्झितक फिर से कामध्वजा के साथ विषय-सुखों के भोग में लिप्त हो गया।

व्यक्ति जब काम-वासना में अंधा हो जाता है तो वह अपने दुःख, शत्रु और यहां तक कि मृत्यु को भी विस्मृत कर देता है। बड़े-बड़े ज्ञानी तपस्वी भी विषय-सुखों के दास बन जाते हैं, फिर मूढ़ मानव की क्या बिसात! कामध्वजा के यहां रहकर विषय-सुख भोगते हुए उज्झितक की भी यही स्थिति थी।

एक दिन की बात है। जिस समय उज्झितक कामध्वजा के साथ कामक्रीड़ा में व्यस्त था, ठीक उसी समय राजा विजयमित्र भी वहां आ पहुंचा। अपनी प्रिय गणिका के साथ उज्झितक को कामक्रीड़ा में रत देखकर विजयमित्र का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसका चेहरा लाल हो उठा। भृकुटी चढ़ गई। क्रोध से तमतमाते हुए उसने अंगरक्षकों द्वारा उज्झितक को गणिका भवन के बाहर फिंकवा दिया। राजा के सैनिक इतने पर ही नहीं माने। उन्होंने डंडे और मुक्के से उसकी जम कर पिटाई कर दी। शरीर का एक-एक अवयव ढीला पड़ गया। शरीर की हड्डियां बजने लगीं। सैनिकों ने उसके दोनों हाथ पीछे बांध दिये और वधस्थल पर ले गये। यह वही अवसर था, जब तुमने उसे देखा।

गौतम! विषयांध उज्झितक की यही करुण-कथा है।

उज्झितक के कर्मों की यह कठोर परिणति देख कर गौतम आश्चर्य से भर गये।

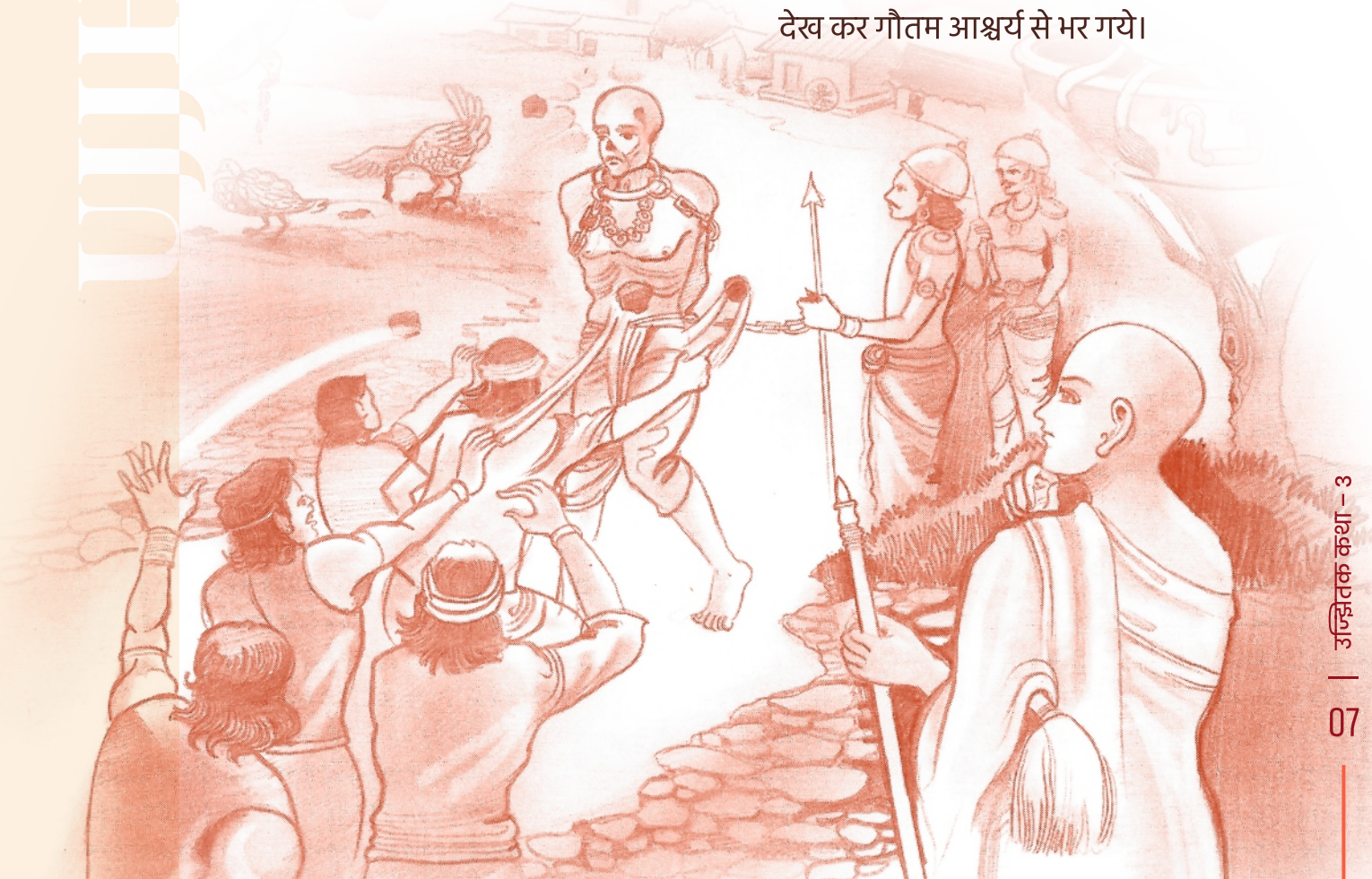

गौतम ने पूछा : भगवंत! उज्झितक यहां से मर कर कहां जायेगा ? कौन सी गति में उत्पन्न होगा?

मैंने कहा : गौतम! शूली पर चढ़ा हुआ उज्झितक आज ही संध्याकाल में पच्चीस वर्ष की आयु पूर्ण कर मृत्यु को प्राप्त होगा। यहां से वह प्रथम रत्नप्रभा नरक में नारकी के रूप में उत्पन्न होगा। परमाधामी देवों द्वारा भयंकर पीड़ा सहन करते हुए नारक-आयुष्य पूर्ण कर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत की तलहटी में वानर के रूप में जन्म लेगा। यौवन काल के आगमन के साथ ही उसमें पूर्वभव के कामभोग के संस्कार फिर से जागृत हो जायेंगे। वह युवा वानरियों के साथ कामक्रीड़ा में लिप्त होगा। जो बच्चे होंगे, उनको वह मार डालेगा। इस प्रकार निरंतर कुकर्म करते हुए अशुभ कर्म का बंध कर मृत्यु को प्राप्त होगा। वह पुनः जम्बूद्वीप के इन्द्रपुर नगर में एक गणिका के घर पुत्र रूप में जन्म लेगा। जन्म के साथ ही मां-बाप उसे नपुंसक बना देंगे। उसका नाम होगा- प्रियसेन।

युवा-वय को प्राप्त करने के साथ ही प्रियसेन के रूप में निखार आयेगा। वह रूप, यौवन व लावण्य से भरपूर होगा। अपनी बुद्धि और ज्ञान से तेजस्वी बनेगा। आगे जाकर इन्द्रपुर नगर के राजा, श्रेष्ठि, सेनापति, कौटुम्बिकों आदि को अपनी विद्या व अभिमंत्रित चूर्ण के माध्यम से अदृश्यीकरण, वशीकरण, प्रसन्नीकरण से पराधीन कर अपने वश में कर लेगा और वह मनुष्य लोक के सभी भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए जीवन व्यतीत करेगा।

इस प्रकार पूरे जीवन भर दुष्कर्म करते हुए, जीवन को पापमय बनाते हुए भारी कर्म बांधता हुआ 121 वर्ष की आयु पूर्ण कर प्रियसेन का जीव प्रथम नरक में उत्पन्न होगा। यहां से निकल कर वह सरीसृप योनि के सर्प आदि के रूप में अनेक बार जन्म लेगा। तदुपरांत वह मृगापुत्र की तरह सातवीं नरक में जायेगा। वहां से निकल कर वह मत्स्य आदि जलचर योनि में लाखों बार जन्म लेगा। फिर उरसरिसर्प, भुजपरिसर्प, खेचर आदि में तथा विकलेंद्रिय में भी लाखों बार जन्म लेगा। वहां से निकल कर वह प्रियसेन का जीव एकेन्द्रिय के पांचो प्रकार में कई लाख बार जन्म-मरण को प्राप्त होगा।

अनेकानेक नरक एवं तिर्यंचगति में बार-बार भव-भ्रमण करने के उपरांत प्रियसेन का जीव जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की चम्पानगरी में पाड़ा के रूप में जन्म लेगा। उस नगर के मित्रें का एक मण्डल उस पाड़े की हत्या कर देगा। इससे मृत्यु को प्राप्त कर वह उसी नगर में श्रेष्ठिपुत्र के रूप में उत्पन्न होगा। बाल्यावस्था को पार कर युवावस्था में आते हुए विशिष्ट संयमी स्थविर के पास सम्यक्त्व प्राप्त कर चारित्र जीवन अंगीकार करेगा। वहां से काल कर प्रथम देवलोक में देव रूप में उत्पन्न होगा। देवायुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में धनाढ्य कुल में जन्म लेकर चारित्र धर्म का पालन करेगा और केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में जायेगा।

अमावस्या की घनी काली रात में प्रभु महावीर द्वारा वर्णित उज्झितक का पाप-विपाक श्रवण करते हुए समस्त सभा पाप-विपाक से भयभीत हुई।

उज्झितक कथा संपूर्ण

पहचान लो मुझे - मैं हूँ दुर्योधन

पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरिजी म.सा.

कौरव कुल में पहला गर्भ मेरी माता गान्धारी को रहा, किन्तु मैं इतना पापी की तीस माह तक प्रसव नहीं हुआ। मेरी माता ने प्रसव हेतु अनेक प्रयास किए, किन्तु सभी प्रयास निष्फल रहे। इतना ही नहीं, मेरे गर्भकाल में मेरी माता को पापों से भरे विचार आते थे और वेदना भी बहुत होती थी। उपरान्त मेरी माता की देवरानी कुन्ती, उनके बाद गर्भवती बनी, लेकिन पुत्रवती पहले बन गई, क्योंकि उनकी कुक्षि से युधिष्ठिर का जन्म हो चुका था। ऊपर से उन्हें दूसरा गर्भ भी रहा और उसके भी प्रसव की तैयारियाँ चल रही थी। और मेरे जन्म का तो अब तक कोई ठिकाना ही नहीं था। यह सब विचार करके मेरी माता अत्यन्त व्याकुल हो गई और अपने पेट पर जोर-जोर से मुक्के मारने लगी। ऐसा करने से प्रसव तो हुआ, किन्तु सर फट जैसे ऐसी बदबू के साथ मैं एक मांस-पिण्ड के साथ बाहर निकला, और यह देखते ही माता चीख उठी और विचार करने लगी कि इस मांस-पिण्ड का मैं क्या करूँ?

मेरे अविकसित आँख, कान आदि अंग देखकर और गर्भकाल के दौरान आए भयंकर स्वप्नों का विचार करके, और जन्म के समय सुनाई दे रहे उल्लू आदि के अपशकुन वाले शब्दों से चिन्तार्त्त और पीड़ार्त्त बनी माता गान्धारी ने मुझे कुल-विनाशी समझकर मार डालने का आदेश दिया। किन्तु उस समय वृद्ध दासियों और मेरे पिता धृतराष्ट्र की दखलअंदाजी से उस आदेश पर रोक लगी, और मैं जीवित रहा।

कुलवृद्धाओं ने मांस-पिण्ड जैसे मेरे शरीर की देखभाल करनी शुरु की। घी से लथपथ कपड़ों में मांस-पिण्ड को लपेट-लपेटकर पहले दुर्गन्धमुक्त

किया गया। पूरी सावधानी रखने के कारण कुछ ही समय में मेरा बालक स्वरूप दिखाई देने लगा। यह देखकर मेरी माता को खूब शांति मिली।

जिस दिन मेरा जन्म हुआ, उसी दिन तीन प्रहर के बाद कुन्ती ने भीम को जन्म दिया। मतलब, मेरे और भीम के बीच मात्र तीन प्रहर (नौ घण्टे) का ही अन्तर था। समभावी राजा पाण्डु ने दोनों का जन्म महोत्सव एक सरीखा मनाया।

मेरे पिता धृतराष्ट्र ने मेरा नाम दुर्योधन रखा। मैं और भीम साथ-साथ खेले और साथ-साथ ही बड़े हुए। मेरे पिता के गान्धारी के अतिरिक्त सात पत्नियाँ और भी थी, उनसे अनुक्रम से निन्यानवें पुत्र (मेरे पश्चात्) और हुए। हम सौ भाई सौ कौरवों के नाम से प्रसिद्ध हुए। काका पाण्डु के पांच पुत्र पाण्डवों के नाम से जाने गए। हम सब साथ ही रहते और साथ ही क्रीड़ा करते थे। मेरी एक दुःशल्या नामक बहन भी थी। योग्य वय होने पर उसका विवाह सिन्धु देश के राजा जयद्रथ के साथ करवाया गया।

हम एक सौ पांच भाई रोज सुबह उठकर भीष्म, धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर, सत्यवती, अंबिका, अम्बालिका, अम्बा, गान्धारी, कुन्ती, माद्री, कुमुदवती आदि सभी बड़ों को प्रणाम करते और उनके आशीर्वाद लेते थे।

हम 105 भाई खेलने के लिए कभी गंगा नदी के किनारे उछल-कूद करते, कभी पानी में डुबकी लगाते, कुश्ती और अनेक प्रकार की कसरत करते। इन सभी खेल में भीम सबसे अव्वल रहता, किन्तु फिर भी वह सभी भाइयों के प्रति एक सरीखा स्नेह रखता था, और मेरे प्रति तो विशेष। प्रेम के बावजूद भी उसका खेल ऐसा होता कि हमें चोट लगे बिना नहीं रहती। खेल-खेल में भीम हम कौरवों को आसानी से उठाता और अपनी बगल में दबा लेता। हमें वृक्ष पर चढ़ा हुआ देखकर कर वह वृक्ष को जोर से हिलाकर हमें नीचे गिरा देता। यद्यपि ये सब बाल-सुलभ खेल ही था। उसके हृदय में हमारे प्रति जरा भी द्वेष भाव नहीं था। बड़े लोग भी उसकी बाल-सुलभ हरकतों पर गुस्सा नहीं करते थे। बेशक, मैं उसके बाल-सुलभ पराक्रम नहीं देख पाता था। उसकी इन चेष्टाओं ने मेरे हृदय में ईर्ष्या और वैर का बीजारोपण किया। उस समय मेरे मन में उठी वैर और ईर्ष्या की 'डिम लाइट' कुरुक्षेत्र के मैदान में बिजली बनकर प्रज्ज्वलित हुई। इस ईर्ष्या ने मेरे जीवन को जलाकर राख कर दिया, खत्म कर दिया, मेरे भवोभव बिगाड़े। **सत्य है कि, अज्ञान और जड़ता जीवन के पतन की गहरी खाई होती है।**

कभी-कभी भीम और मैं कुश्ती में दो-दो हाथ करने हेतु तैयार होते तो सभी लोग हमारी कुश्ती देखने के लिए इकट्ठा हो जाते। उस समय भीम मेरे शरीर पर ऐसे प्रहार करता कि मैं बचने के लिए अपने भाइयों के पास भागता, और भीम अपने चार भाइयों के पास जाता, तो वे पाण्डव भीम के विजय में पागल बन जाते और उसकी पीठ थपथपाते। उस समय मैं ईर्ष्या की आग में जलता। **यथार्थ में ईर्ष्या बिना लकड़ी की आग है और**

बिना तलवार की वार है। निस्संदेह विवेकवान युधिष्ठिर का सभी भाइयों के प्रति एक समान स्नेह रहता था और वह इन सब हरकतों को बाल-क्रीड़ा के रूप में ही देखता था।

किन्तु अब तक 105 भाइयों में जो निर्दोष प्रेमभाव था, वह मेरी संकुचित ईर्ष्यालु दृष्टि के कारण नाश होने लगा और उसके स्थान पर भेदभाव ने जगह बनाई। फिर तो भीम को मारने के लिए मैंने अनेक युक्तियाँ की, जैसे:

1. **भीम गाढ़ निद्रा में हो तब उसे वेलड़ी से बाँध-कर पानी में गिराना।**
2. **उस पर जहरीले सर्प छोड़ना।**
3. **उसके भोजन में जहर मिलाना, आदि।**

किन्तु मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। मेरे सारे पैंतरे बेकार गए, ये सभी प्रयास भीम को खराब असर करने की बजाय अच्छा असर करने वाले बने। भीम के लिए प्रतिकारक और रामबाण रसायन साबित हुए। उस समय भी भीम यही विचार करता था कि मैं यह सब बाल चेष्टा के रूप में कर रहा हूँ। जैसे कपटी कभी भी अपनी कपट दशा नहीं छोड़ता, वैसे ही सरल व्यक्ति भी अपनी सरलता नहीं छोड़ता। अन्त में हम सबको हमारे बड़े भीष्म, विदुर आदि ने कृपाचार्य और द्रोणाचार्य जैसे महान और विद्वान गुरुओं से शस्त्राभ्यास और शास्त्राभ्यास हेतु भेजा गया। इस कार्य में अर्जुन सबसे आगे रहा। समय बीतते हम सबका विवाह हुआ।

समय बीता और युधिष्ठिर का हस्तिनापुर के सिंहासन पर राज्याभिषेक हुआ। उस प्रसंग पर निर्मित हुई दिव्यसभा में नीलमणियों की रचना इस प्रकार की गई थी कि फर्श के स्थान पर जल होने की भ्रान्ति हो जाए। इसलिए मैं कपड़े ऊपर करके चलने लगा। फिर आगे बढ़ा तो वहाँ वास्तव में पानी का कुण्ड था, लेकिन मुझे सपाट धरती का भ्रम हुआ और मैं उस कुण्ड में गिर गया। यह देखकर भीम जोर से हँसने लगा, इस कारण मुझे बहुत बुरा लगा। ऐसा बार-बार हुआ, और यह देखकर युधिष्ठिर के अलावा बाकी पाण्डव जोर-जोर से हँसने लगे, और उसी समय द्रौपदी के मुख से निकले शब्द, 'अन्धे जाया अन्ध' अन्धे का पुत्र अन्धा ही होता है, इन शब्दों सुनकर और मेरे हुए अपमान से मैं आगबबूला हो गया। मेरे मन में गुस्से की आग दहकने लगी। हालाँकि युधिष्ठिर ने मुझे शान्त करने के थोड़े-बहुत प्रयास किए मुझे शान्ति नहीं मिली, और बचपन से हृदय में

पाण्डवों के प्रति बन्धी वैर की गाँठ एकदम मजबूत बन गई। **सत्य है, कि जीभ परमाणु बॉम्ब से भी अधिक खतरनाक होती है। इसका ब्लास्ट करोड़ों लोगों का संहार करता है।** महाभारत के युद्ध में करोड़ों सैनिकों के रक्तसंहार के पीछे यह ईर्ष्या और जीभ ही कार्य कर रही थी।

किसी शायर ने सत्य ही कहा है, कि

रसना में अमृत बसे, रसना विष भी होय
मिले लाख ईनाम भी, जान हानि भी होय

मैं खुद इंद्रप्रस्थ नगरी का राजा था, किन्तु मुझे दिव्यसभा की दिव्यता, पाण्डवों द्वारा उड़ाई गई मेरी हँसी और पाण्डवों की दिन-प्रतिदिन होती प्रगति मुझे समिलकर हमने एक योजना बनाई। हस्तिनापुर से बेहतरतत बेचैन करती थी। मेरे मन में ईर्ष्या की अग्नि तीव्र रूप से जल रही थी। शुरु में मामा शकुनि ने मुझे ईर्ष्या छोड़कर प्रमोद धारण करने हेतु बहुत समझाया, किन्तु मुझे या तो पाण्डवों का नाश, या फिर मेरे प्राणों का नाश, इन दो विकल्पों के अतिरिक्त और कोई बात सूझ ही नहीं रही थी।

वैसे मेरे पिता ने भी मुझे पाण्डवों के प्रति ईर्ष्या न करने और प्रमोद भाव रखने के लिए बहुत समझाया, किन्तु मैं टस से मस नहीं हुआ। जब मैंने आत्महत्या की धमकी दी तब पुत्र-मोह में अन्ध मेरे पिता ने मेरा पक्ष लिया।

फिर मामा शकुनि के साथ एक दिव्य सभा का निर्माण इन्द्रप्रस्थ में किया। पाण्डवों को निमन्त्रण देकर वहाँ द्यूतशाला आयोजित करके उन्हें जुए में हराना था। हमारे मन की मैली मुराद के अनुसार सब कुछ हुआ। जुए में जब युधिष्ठिर सब कुछ हार गया तो मामा शकुनि ने उसे द्रौपदी को दांव पर लगाकर सब कुछ वापिस जीत लेने के लिए आखिरी बाजी खेलने की सलाह दी। **'विनाश काले विपरीत बुद्धि'** सबके मना करने पर भी युधिष्ठिर ने द्रौपदी को दांव पर लगाया। **जब दशा खराब चल रही हो तो सद्बुद्धि कहाँ से होगी?**

पाण्डवों द्वारा द्रौपदी को दांव में हारते ही मैंने अपने छोटे भाई दुःशासन को आज्ञा दी, कि द्रौपदी अब हमारी सम्पत्ति है, तू उसे इस सभा में लेकर आ। जब दुःशासन द्रौपदी को लेने गया, तो द्रौपदी ने उसे अच्छे से समझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु सब व्यर्थ गया। दुःशासन ने द्रौपदी की चोटी पकड़ी और उसे घसीटते हुए सभा में लेकर आया। भीष्मादि सब बड़े-बुजुर्ग और पाण्डवों ने यह दृश्य देखकर अपनी नजर नीची कर ली। अतिशय रो रही द्रौपदी के रूप को देखकर मैं मुग्ध हो उठा और बोला कि, 'तुझे जुए मैं हार दिया गया है, अब तू मेरी है। मेरे पास आ, हम मौज करेंगे। आकर मेरी जंघा पर बैठ।'

यह दृश्य देखकर लोगों में हाहाकार मच गया। कुछ लोग रोने लगे, तो कुछ अचेत होकर धरती पर गिर पड़े। क्रोधवश द्रौपदी और भीम की आँखों में से मानो अंगारे बरसने लगे। द्रौपदी के कटु वचनों से मैं क्रोधान्ध बना और दुःशासन को उसकी साड़ी खींचने की आज्ञा दी। क्रूर हृदयी दुःशासन चीरहरण हेतु तत्पर हुआ, किन्तु उस महासती के शील के प्रभाव से क्षेत्रदेवताओं ने

चीर की आपूर्ति की। इस समय कुरुवंश की कीर्ति की कत्ल-ए-आम होती देखकर विदुर से रहा न गया और उन्होंने अग्नि के समान तीक्ष्ण शब्दों से मेरे पिता धृतराष्ट्र को बहुत बुरा-भला कहा, मेरी नीचता सबके सामने प्रकट की। विदुर का पुण्यप्रकोप देखकर मेरे पिता सहित सभी लोग घबरा गए। मेरे पिता भी व्याकुल हुए और अपना 'वीटो' इस्तेमाल करते हुए उन्होंने द्रौपदी को छोड़ने की आज्ञा की। इसलिए दुःशासन ने द्रौपदी को छोड़ दिया।

वास्तव में गर्भकाल में मैंने मेरी माता को कुल के हत्यारे के रूप में संकेत दिया ही था, आज वही सत्य साबित हुआ। मेरे द्वारा कुरुकुल को कलंक लगा, कुल का नाश हुआ। निस्संदेह मेरी माता इस आर्य देश की नारी थी, आदर्श माता थी। युद्ध के समय जब मैं उनसे आशीर्वाद लेने जाता, तब वह कहती थी कि, **'यतो धर्मस्ततो जयः', जिस ओर धर्म है, उसकी विजय हो। बेटा तेरे पक्ष में धर्म नहीं है।'**

बेशक मेरा जीवन बनाने में मेरे पिता का अधिक योगदान था, मैं पितृभक्त था। यदि मेरे पिता मुझे अच्छे रस्ते ले जाते तो मेरी यह हालत नहीं होती। **माता-पिता का काम सन्तान को मांस-पिण्ड के रूप में जन्म देने से पूरा नहीं होता, उन्हें सन्तान का संस्करण करना होता है। यदि इसमें माता-पिता से कोई भूल हो जाए तो उसकी अव्यक्त असर सन्तान पर पड़ती है जो आगे जाकर व्यक्त होती है, और उसका नाश करती है।**

ऐसा भी कह सकते हैं कि मैंने और पिता धृतराष्ट्र ने अपने गलत इरादों और गलत पुरुषार्थ के कारण ही मार खाई। अपने पूर्वकृत कर्मों का हवाला देकर अपने दुष्कृत्यों का बचाव नहीं किया जा सकता।

1) जब युद्ध नहीं करने के कारण मध्यस्थ के रूप में आए श्रीकृष्ण को मैंने कैद करने का नाहक प्रयास किया, 2) पांच पाण्डवों को मात्र 5 गाँव देने की श्री-कृष्ण की समझदारी भरी सलाह की अवगणना करके उन्हें सुई के नोक जितनी भी जमीन देने का कदाग्रह, 3) द्रौपदी को भरी सभा में अपनी जंघा पर बैठने का आदेश

ये सब मेरी धृष्टता का ही तो परिणाम था।

विशेषतः, अन्त में मेरी अति भयानक करुण मृत्यु हुई, जिससे मेरे जीवन की अधमता की कल्पना की जा सकती है। यथार्थ में, मैं स्वार्थी था, अपने ही प्रेम में गिरा हुआ था, मुझे दुनिया या देवाधि-देव से कोई लेना-देना ही नहीं था।

अन्त समय में श्रीकृष्ण के कहने से भीम ने मेरी जांघ पर इतनी जोर से प्रहार किया कि मेरी जंघा की हड्डियाँ चूर-चूर हो गई। उस समय अतिशय वेदना से चीखते हुए मेरी मनोस्थिति अत्यन्त घातक हो गई थी। उस समय मैंने अश्वत्थामा को पाण्डवों का सर काटकर लाने को कहा। उस समय रात्रि के अन्धकार में उसने गलती से पांच पाण्डवों की जगह उनके पांच पुत्रों का सर काटा और उन पांचालों का रक्तरंजित सर मेरे पास लेकर आया। मैं यह देखकर निःश्वास लेते हुए चीखकर बोला, ये तो पांचाल हैं, पाण्डव कहाँ हैं? पाण्डवों के जिन्दा बचने के आघात से मुझे हताशा हुई, और शारीरिक वेदना तो असह्य थी ही। अन्ततः युद्धभूमि पर ही प्राण त्याग कर मैं सातवीं नरक गया। **जैसी मति, वैसी गति। मेरे तो जन्म, जीवन और मृत्यु तीनों ही बिगड़े, बाकी क्या रहा?**

प्रभु की अंतर्लीन और औचित्यपूर्ण अवस्था

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

त्रिशलाराणी शंकित हो गये
क्योंकी गर्भ का स्पंदन अब बंद हो गया है।
जीवन की कल्पना स्पंदन से होती है
जीवन का अनुभव तो निःस्पंद से मिलता है।

त्रिशलाराणी के गर्भ में जो रचना हो रही थी
वो सारी स्पंदन से जुड़ी हुइ थी,
लेकीन जिसकी रचना हि नही हुइ और फिर भी
सारी रचना जिसके उपर हो रही है
वो चैतन्य निःस्पंद था...।
प्रभु रचना के स्पंदन से नहि पर निःस्पंद में विराजमान थे...
और इसी कारण
रचनाओ ने भी अपना कंपन स्थगित कर दीया...।

संसार कंपन से चलता है।
कंपन नहि दिखो तो बडी बेचेनी आ जाती है...।
वृक्षोमें पत्तो का, सरोवरो में पानी का, वातावरण में हवा का,
शरीर में धड़कनो का, मन में विचारो का कंपन चाहते है हम
और कंपन का अर्थ है अस्थिरता...।
अस्थिरता यानि अपने मूलरुप को खो देना...।
कंपन ओरो से आता है, ओरो से हटे तो निष्कंप तत्त्व है।
जन्म भी कंपन है, मृत्यु भी कंपन,
सर्जन भी कंपन है, विसर्जन भी कंपन...।
कंपन के अलावा संसार में है क्यां ?
प्रभु तो गर्भ में भी संसार से अगवा है
निष्कंप में प्रविष्ट है...। और कंपनो के साक्षी है...।

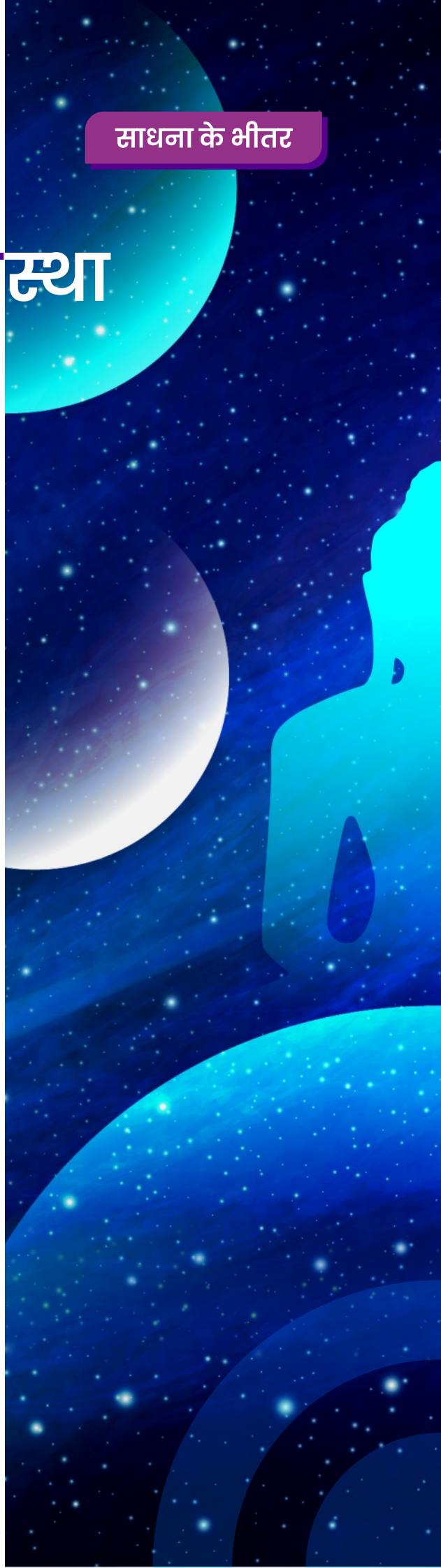

प्रभुने जिस औचित्य से अपनी शारिरिक रचनाओ को संयमित किया था उसमें भाव था माता को कष्ट न हो पर माता को अधिक कष्ट हुआ।
माता तो शरीर की माता होती है।
शरीर जीवंत होने का प्रमाण स्पंदन से मिलता है।
स्पंदन नही महेसूस हुआ तो माता नाराज...।
गुरुमां, परमात्मा अध्यात्म की माँ है।
अध्यात्म जीवंत होने का प्रमाण निःस्पंदन के स्पर्श से मिलता है,
चेतना स्पंदित हुइ तो गुरुकृपा और प्रभुकृपा का प्रवेश द्वार बंद हो जाते है...।
प्रभु महावीरने पूर्व भवो में अनंत सद्गुरु और अनंतपरमेश्वर की सहज कृपा झेलने का अभ्यास को निस्पंदता के रुप में सिद्ध कर लिया था...।

ज्ञात हुआ की माता को स्पंदन से शांति मिलेगी,
और प्रभुने अपनी शारिरीक रचना का एक भाग - अंगुष्ठ प्रमाण स्पंदित किया...।
अर्थात् प्रभु की चेतना निष्कंप थी और स्पंदन जो करने पडे थे उसमें वो जूडे नही थे...।

उचित करने के लिए आग्रह छोडना पडता है।
प्रभुने माता के सुख के लिए स्थिर होने का निर्णय किया था, परंतु स्थिर होने से माता को सुख के बजाय दुःख उत्पन्न हुआ।
माता के शरीर को पीडा न हो इसलीए स्थिर हुए प्रभु,
और माता के मन की पीडा उत्पन्न हो गइ।
शरीर की पीडा से मन की पीडा ज्यादा दुःखदायिनी होती है...।
प्रभुने अपना निर्णय बदल दिया, छोड दिया आग्रह...

इस घटना से हम सीखे प्रभु की अंतर्लीन और औचित्यपूर्ण अवस्थाओ को कैसे देखे ? जिससे हमारे भीतर गुण और तत्त्व का प्रागट्य हो...।

Secret of Work

पूज्य मुनिराज श्री अक्षयकीर्ति विजयजी म.सा.

"सहसा न विदधीत क्रियाम्,
अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं
गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।"

छगन : अरे मगन ! तुम क्या कर रहे हो

मगन : मैं कुछ भी नहीं करता... सिर्फ सोचता रहता हूँ। पर... छगन ! तु क्या करता है ?

छगन : मैं ज्यादा सोचता ही नहीं... सिर्फ काम करता हूँ।

दुनिया में तरह-तरह के लोग है । बहुत से लोग ऐसे होते है जो सिर्फ सोचते रहते है...। कुछ खास काम नहीं करते... कमज़ोर, कामचोर, नकारात्मक सोच में... अपने दिन, महीने, साल गुजार देते है। कुछ खास काम नहीं कर पाते, जिंदगी में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते, सिर्फ एक Routine Life जीते है... वह भी मुश्किलों से भरी, ऐसे लोगों को निष्क्रिय ही कह सकते है ।

बहुत से लोग ऐसे होते है, जो कार्य तो बहुत करते है या होंगे, पर योग्य सोच के बगैर... ऐसे लोग कार्य के बारे में जल्दी निर्णय लेकर, आगे बढ़ते होंगे । उनके पास short thinking होती है । ऐसे लोगों का कई प्रकार का नुकसान होता है... और पछतावा करते है । इसलिए धारणा कर सकते है... जो नुकसान निष्क्रिय लोग करते है... उससे अधिक नुकसान ऐसे सक्रिय लोगों का होता है ।

एक किसान ने एक नेवले को पाला था । वह बहुत ही चतुर था और मालिक का वफादार था । एक दिन वह किसान कही गया था । तभी किसान की पत्नी अपने छोटे बच्चे को उसके भरोसे छोड़ कुए पर पानी भरने गई ।

अब हुआ ये... उसकी पत्नी के जाने के बाद एक काला नाग सर-सर करते हुए आ रहा था । उसकी नज़र जेसे ही नाग पर पड़ी वह उस पर टूट पड़ा । उसने नाग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए ।

किसान की पत्नी जब पानी भर के वापस आयी, तो उसने उसके मुह में नाग के टुकड़े देखें... उसे गैरसमझ हुई... उसे लगा, उसकी गैरहाजरी में... उसके बच्चे को मार दिया, आधे दुःख और क्रोध से भरी... वह स्त्रीने उसके उपर पानी से भरा घड़ा

पेंक दिया... वह मर गया... वह जब घर के अंदर दौड़ कर आई तो देखा बच्चा तो शांति से सो रहा है पर उसके पास एक मरे हुए काले नाग के टुकडे पडे है, किसान की पत्नी को अपनी गलती का एहसास हुआ । उसके बाद वह नेवले के पास आयी, अपनी गोद में लिया और बहुत रो पड़ी... पर अब पछताने से क्या... इसलिए कहा गया है।

"वगर विचारे जे करे ते पाछळ पछवगय;
काम बगाड़े आपणु, जगमां मूर्ख कहवाय"

यह Short Thinking = अविवेक, Future में बहुत सारी आपत्ति का कारण बनता है।

वर्तमान समय में यह Short Thinking = अविवेक, बहुत से लोगो की प्रवृत्ति में दिखाई देता है, जैसे के

- पैसे कमाने के लिए सट्टा वगैरे अनुचित उपाय करना
- अधिक सामाजिक, पारिवारिक Problems होने से Suicide करना
- प्रेम में पड़े व्यक्ति Bycaste Marriage करते है... etc.

ऐसी बहुत सी प्रवृत्ति के कारण भविष्य में दुःख मिलता है... पछतावा करना पड़ता है ।

प्रस्तुत सुभाषितकार में कोइ भी कार्य करने के लिए Best Secrets बताया गया है ।

"कोई भी कार्य करने से पहले पूरी तरह से विचार करो"

वर्तमान स्थिति में लोग Short Thinking से कार्य करते है ।

Perfect Thinking First and Must पर कार्य करने के लिए है ।

Result को नज़र के सामने रख कर करो । स्व और पर का हित का विचार करो ।

कोई भी कार्य करने के लिए तीन बातों को ध्यान में रखो

1) दूर की सोच रखो... छोटी सोच से विचार मत करो ।
2) कार्य का परिणाम क्या मिलेगा इसका विचार करो ।
3) स्व और पर का नुकसान तो नहीं हो रहा है ? स्व-पर के चित्त का विचार करो ।

प्रस्तुत सुभाषितकार अपने को एक दूसरी अच्छी बात बता रहे है... संपत्ति के Nature की पहचान दे रहे है... संपत्ति गुण की लालची है... गुणवान व्यक्ति के पास संपत्ति सामने से दौड़ कर आती है... दुनिया के सामान्य लोक संपत्ति को Like करते है... पर संपत्ति तो Perfect Thinking से काम करते हुए असामान्य व्यक्ति को Like करती है ।

"Every thought that we think is creating our future"

Everything is Online, We are Offline

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

एक दर्दनाक सत्यघटना से शुरुआत करते है...

जम्मु का एक गरीब परिवार...

गाय का दूध बेचकर अपना जीवन यापन कर रहा था। शायद अपनी गायका दूध अपने बच्चे को भी वे नहीं दे पाते होंगे। लॉकडाउन और सब कुछ ऑनलाईन ने कमर तोड दी उस परिवार की। दूसरी और चौथी कक्षा में पढनेवाली दो संतानो की शिक्षा जारी रखने के लिए स्मार्टफोन लाना अनिवार्य था और स्मार्टफोन खरीदने के लिए गाय को बेचना।

ऐसे फालतू खर्चे आज घर-घर में अनिवार्य मानकर किए जा रहे है। आज चार बच्चों के लिए घर में चार स्मार्टफोन बसाना अनिवार्य हो गया है।

पहले हमें यह सिखाया जाता रहा कि, बच्चों को मोबाईल फोन से दूर रखा जाए क्यों-कि उन मोबाईल के रेडिएशन, बच्चों की सेहत के लिए भयानक नुकशानदेह हैं और अब उसी स्मार्टफोन से बच्चों को चिपकाकर पढ़ाने की नौबत आ गई।

जो भी नुतन होता है वह हमेशा आवकार योग्य नहीं होता है। अतिथि देव जैसा होता है मगर वो अतिथि होना जरूरी है, आतंकी नहीं... क्योंकि आतंकी दानव जैसा होता है... नविन विश्व व्यवस्था आतंकी जैसी है या अतिथि जैसी ? शायद आपको इस लेख को पढ़ने के बाद अंदाज़ा लग जाएगा।

पता नहीं, वर्तमान की सरकारों की क्या मजबूरी है कि वह लगातार सब कुछ ऑनलाईन करने पर उतारु हो गई है। चाहे वह पैसों का लेन-देन हों, या विद्या का दान-ग्रहण हों, चाहे व्यापार हों या चाहे मनोरंजन के विविध उपाय हों, चाहे खाने-पीने की चीजें हों, चाहे खेल विश्व हों, चाहे न्याय व्यवस्था हों, चाहे स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे हों। इतना ही नहीं, अब धर्मक्षेत्र भी ऑनलाईन होने जा रहा है।

पहले व्यापार की बात करते है। पिछले कुछ महिनों से भारत देश के 9 करोड़ से अधिक व्यापारी बड़ी चिंता में है। कुटीर उद्योग और सामान्य दुकानदार स्वरोज़गार के ताकतवर स्तंभ है। लॉकडाउन की परेशानियों में सरकार ने व्यापारियों को सीधे या बेंको द्वारा भी कोई मदद नहीं दी। वहीं बेंको ने जब से अपनी बीमा कंपनियां बनाकर या एजेंसी लेकर बीमा कारो-बार शुरु किया है, तब से बेंक अपने ही खातेदार व्यापारी के ऊपर लगातार बीमा कराने का दबाव बना रहे है।

दूसरी ओर, कॉरपोरेट घरानों के खुदरा बाजार में उतरने को छोटे व्यापारियों के लिए बड़ा खतरा माना जा रहा है। सर्वत्र यही शंका है कि बड़ी मछली, उन्हें छोटी मछली की तरह गटक जाएगी। 10 प्रतिशत व्यापारी तो इसी दिपावली पर अपनी अंतिम कमाई करके दुकान बेचने के मूड में हैं, क्योंकि दुकान खुद की, निवेश खुद का, जोखिम खुद उठाने का और महेनत भी खुद की, फिर भी इन्कम टेक्स, जी.एस.टी. सरकार को जाए, घाटा जाए तो खुद का, कमाई हो तो सरकार भागीदार।

राजा-महाराजाओं के जमाने में व्यापारीयों को महाजन कहा जाता था और आज चोर बताया जाता है। हमारे अधिकांश जैनधर्मावलंबी व्यापारी है।

किसान यदि अन्नव्यवस्था का आधार है, तो व्यापारी अर्थव्यवस्था की नींव है, मगर ऑनलाईन प्लेटफोर्म के सामने यह नींव खोखली होती जा रही है। वॉलमार्ट जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनीयाँ, हजारो करोडो रुपये का लोस टार्गेट लेकर बेठी है। उसमें सामान्य दुकानदार कहाँ जाएगा ? पहले नोकर बनेंगे, फिर मजदूर और आखिर भिखारी...

मार्केट में बीकने वाली हर चीज के भाव अब खुल्ले हो गए है और कई ग्राहक दुकान में सिर्फ माल देखने आते हैं, वो ही चीज ऑनलाईन मंगवा लेते हैं। दुकान में माल लेने जाने में, पार्किंग की, ट्रेफिक की एवं टाईम (समय) की समस्या, जो ऑनलाईन में नहीं है। कई लोगों ने दुकान किराये पर ली है तो किराया भरने की चिंता और दुकान खुद की है तो तेजी से परिवर्तित हो रहे बाजार में दुकान की किंमत जितना ब्याज भी धंधे से मिलना मुश्किल। ऐसी अनेक-अनेक समस्याओं का सामना करने की क्षमता नहीं रखनेवाले व्यापारी अब धंधा छोड़ देने का मन बना चुके है, मगर इससे तो भारत ही अधिक गुलामी की ओर आगे बढ़ रहा है। सबसे बड़ा डर इस बात का है कि, भारतभर के 9 करोड़ से अधिक खुदरा व्यापारी आत्महत्या में किसानों से आगे ना निकल जाये, क्योंकि इज्जत जिंदगी से भी ज्यादा प्यारी होती है...

जो बच्चे मैदान में खेलने नहीं जा पा रहे हैं, वो बच्चें इन 6 महिनों में ऑनलाईन गेम खेलने को मजबूर थे और अब उसके आदी भी होने लगे हैं। M.P. इन्दौर के लसुडिया में 11 साल के बच्चे ने,

10 साल की एक बच्ची का सर पथ्थर से कुचल कर इसलिए फोड दिया क्योंकि उस बच्ची ने ऑनलाईन गेम में उसे हरा दिया था। महाहिंसक गेम पबजी प्रतिबंधित होने पर बंगाल में बच्चे ने जान कुर्बान कर दी यानी आत्महत्या कर ली। यह तो ऑनलाईन के दुष्परिणामों की अभी शुरुआत मात्र है क्योंकि पबजी भले ही बंद हो गई, मगर इससे भी खतरनाक 5G आ रहा है।

लॉकडाउन के दौरान और स्कुल-कॉलेज की छुट्टियों के चलते अलग-अलग लोगों ने या संस्थाओंने सोशल मीडिया पर गाना गाने की या संगीत-नृत्य-नाट्यमंचन की प्रतियोगिता का प्रारंभ किया, जिसमें अपनी जैन श्राविका बहनों ने भी हिस्सा लिया था।

चौंकानेवाली बातें सामने आ रही है, ऐसी प्रति-योगिताओं में बहनें अपना नाम, नंबर, एरिया, फोटो भी शेयर करती है, जो जानकारीयां लम्बे अरसें तक सोशल मीडिया में उपलब्ध रहती है। ऐसी जानकारी, जो कि जाहिर में सभी के लिए Open हो चुकी है, जिससे कोई भी व्यक्ति आसानी से बहनों की पर्सनल जानकारी प्राप्त कर सकता है और उसका दुरुपयोग भी कर सकता है। आप आश्चर्य करेंगे, ऐसी सिंगिंग कम्पीटीशन और एप लोकेशन से लीक हुए डाटा से अहमदाबाद में एक जैन लड़की को फँसाकर विधर्मीयों के द्वारा भगाया गया। बलात्कार किया गया। ब्लेकमैल भी किया गया। समाचार है कि ऐसा सिर्फ एक स्थान ही नहीं, अनेक स्थान में रही संस्कारी, धर्मप्रेमी श्राविका बहनों को फाँसने का भी प्रयास हुआ।

उपर लिखी गई जानकारीयाँ, हकीकत में जैन-शासन में हड़कंप मचाने के लिए काफी है।

हम कब तक आँखे मूँद कर सोते रहेंगे? और अपनी संस्कारों की विरासत खोते रहेंगे?

यदि अभी भी कुंभकर्ण की निद्रा से जागृत नही हुए तो जीवनभर रोते रहेंगे।

(क्रमशः)

ONLINE OFFLINE

जिनशासन को हार्ट-अटैक

"प्रियम्"

बात हृदय की...

हृदय में जिनशासन की स्थापना हेतु...
जिनशासन के हृदय का
परिचय होना आवश्यक है,
वह न होने से
जिनशासन की उपेक्षा होती है...
अवगणना होती है...
वह अकुंचित हो जाता है...
और अन्ततः जिनशासन को
हार्ट-अटैक आ जाता है।
कईं दफ़ा
ऐसा अटैक सिवियर भी होता है।
वैसे तो हम
जिनशासन का सत्कार ही करते हैं...
लेकिन वह सिवियर अटैक में से
गुजर रहा है,
इसका हमें ख्याल ही नहीं आता।
यदि हम हार्ट को ही नहीं समझ सकें,
तो हार्ट अटैक को
किस प्रकार से समझ सकते हैं ?
चलो, तो फिर आज समझते हैं...

"हार्ट जिनशासन"

मोक्ष जाने के लिए कदाचित् सर्वप्रथम
हमें यही समझने की आवश्यकता है।

NONVIOLENCE

अमारि

अहंकार भी मछलियों के लिए बुनी हुई एक प्रकार की जाल है... आग्रह यह भी एक प्रकार से कसाई की छुरी है... पसन्द भी एक प्रकार से लघु हत्या है... और द्वेष एक प्रकार की मार-पीट होती है...

विभाव विमुख स्वभाव-सन्मुख व्यक्तित्व यह नैश्चयिक अमारि प्रवर्तन है ।

स्मरण आता है योगशास्त्र-

"स्निह्यन्ति जन्तवो नित्यं वैरिणोऽपि परस्परम् ।
अपि स्वार्थकृते साम्यभाजः साधोः प्रभावतः ॥"

वैरी जीव भी...

परसपर स्नेह करते हैं ।

यह प्रभाव है...

स्वार्थ के लिए भी समतामग्न बननेवाले

महात्माओं का...

मैत्री-भावना यह विचार अमारि है, मीठी वाणी की बोली अमारि है, मुनिचर्या यह आचार अमारि है...

जिसमें इन तीनों का संगम है, वह स्वयं अमारि प्रवर्तन है । अमारि प्रवर्तन करना यह साधना है, अमारि प्रवर्तन की निर्मिती यह सिद्धी है । व्यवहार यह निश्चय की शुद्धि है, निश्चय यह व्यवहार की पुष्टि है ।

भीतर की छुरी की धार निस्तेज हो जाए तो बाहर काँट-छाट होना शक्य ही नहीं है । कषाय यह भीतरी कसाई है, बाह्य धर्म यदि ढक्कन बनकर उस कषाय को आच्छादित करें तो वह कसाई बहुत ड़र जाता है ।

अमारि सिवाय का धर्म यह धर्म नहीं होता, भीतर के मारि का आवरण होता है ।

धर्म का आवरण के रूप में उपयोग करना, यह धर्म का दुरुपयोग है ।

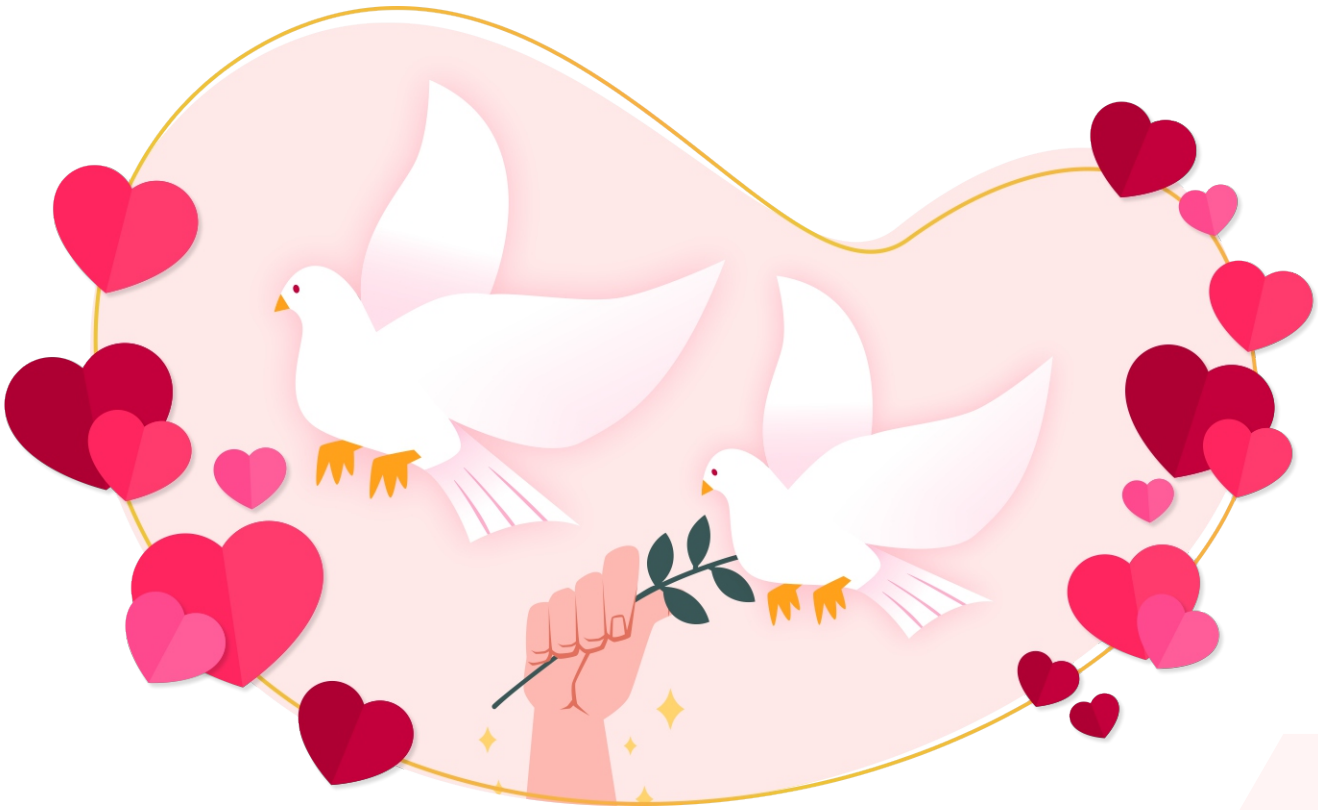

साधर्मिक

पति से बंधे हुए रिश्ते के साथ ही ससुराल के साथ भी संबंध जुड़ जाता है । वैसे ही धर्म के साथ स्थापित संबंध से संघ के साथ रिश्ता भी अपने आप बंध जाता है । निश्चय की दृष्टि से पति और ससुराल दोनों ही समानार्थी शब्द है । निश्चयदृष्टि से ही धर्म और साधर्मिक ये दो शब्द भी समानार्थी है।

छगन की पत्नी का उसकी सास के साथ झगड़ा हुआ । वह उसे जो मुँह में आए वैसा अनाब-शनाब बोलने लगी । तब सास ने उसे कहा, "तु एक संस्कारी खानदान की बहु है, इसका स्मरण रहें !"

छगन की पत्नी ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा, "बहु नहीं! पुत्री कहो, पुत्री !"

ससुर का अपमान यह पति का ही अपमान है । साधर्मिक का अपमान यह धर्म का ही अपमान है।

"मेरे लिए मेरे पति तो देव हैं, परमेश्वर हैं । बस... केवल उनकी माँ अच्छी नहीं है, उनके पापा का ठिकाना नहीं होता, उनका घर विचित्र है, उनका भाई धूर्त है, उनकी बहन डेढ़-शहाणी है, उनकी भाभी एकदम बेवकूफ़ है...।"

ऐसी मान्यता वाली पत्नियों के ख्याल में यह बात नहीं आती कि हकीकत में इस प्रकार के सभी अपशब्द वह अपने पति परमेश्वर को ही दे रही हैं ।

"यदि पति परमेश्वर है, तो उसके साथ जुड़े हुए भी सभी परमेश्वर ही..."

- यह भूमिका कुलवधू को कुलवधू बनाती है ।

"यदि वासुपूज्य दादा परमेश्वर है, तो उनसे संबंधित भी सभी परमेश्वर ही..."

- यह भूमिका जैन को वास्तव में 'जैन' बनाती है।

ससुराल में से किसी एक के साथ भी मन-मुटाव हो, तो कुलांगना यह कुलांगना है ही नहीं...

वैसे ही यदि किसी एक जैन के लिए भी हमारे हृदय में शिकायत हो, तो फिर हम जैन है ही नहीं...

विशुद्धि चक्र ध्यान

पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

(क्रमांक 1 से 6 तक मूलाधार चक्र ध्यान के मुताबिक ध्यान करने के पश्चात)

7. फिर विचार कीजिए कि दूर क्षितिज से गहरे नीले, Grey या Navy Blue रंग की कोई चीज अपनी ओर आ रही है। वह धीरे-धीरे निकट आ रही है, बड़ी हो रही है। वह एक कमल है, अब उसकी सोलह पंखुड़ियाँ देखिए, वह कमल धीरे-धीरे खिल रहा है, प्रकाशमान हो रहा है। फिर उसकी हरे रंग की कर्णिका और पीत वर्ण का और उस पर पतला आसमानी रंग का पराग देखिए।

8. उस पराग के मध्य में श्वेत रंग से अर्धचन्द्र अक्षर बनाइए।

9. अब उस पराग के मध्य में लाल रंग से बड़े अक्षर से 'हँ' अक्षर बनाइए।

10. अब चन्द्र और 'हँ' को स्थिर करके प्रतिष्ठा करें।

11. तत्पश्चात् आकाश से श्वेत वर्ण के पुंज को अपनी ओर आते हुए देखें। समीप आने पर उसके दो भाग हो रहे हैं। और समीप आने पर आप एक बिन्दु में श्री अरिहन्त परमात्मा, और दूसरे में शासन देवी देख रहे हैं। और निकट आने पर आप वहाँ श्री चन्द्रप्रभस्वामी और शासन देवी "श्री ज्वालामालिनी देवी" को देखते हैं। फिर उस नील कमल के पराग में "हँ" अक्षर के मध्य के दाहिनी ओर परमात्मा श्री चन्द्रप्रभस्वामी और बाईं ओर शासन देवी श्री ज्वालामालिनी देवी की प्रतिष्ठा कर रहे हैं।

12. अब पुनः आकाश से आपको श्वेत पुंज आता हुआ दिख रहा है, वह करीब आने पर मातृका वर्णिका दिख रही है – "अ" "आ" "इ" "ई" "उ" "ऊ" "ऋ" "ॠ" "ऌ" "ॡ" "ए" "ऐ" "ओ" "औ" "अं" और "अः" - इन 16 अक्षरों को पद्म की पंखुड़ियों पर प्रदक्षिणावर्त रखें। पंखुड़ियाँ स्थिर होने के बाद उनकी वहाँ प्रतिष्ठा करें।

13. फिर उस कमल के दस रेशे उतारें,

(a) "आ" और "इ" की पंखुड़ी से बीच से "ऐशमारिका",

(b) "इ" और "ई" की पंखुड़ी से बीच से "मात्रिका",

(c) "ई" और "उ" की पंखुड़ी से बीच से "तिक्ता",

(d) "ऊ" और "ऋ" की पंखुड़ी से बीच से "बाला",

(e) "ऋ" और "ॠ" की पंखुड़ी से बीच से "सरस्वती",

(f) "ऌ" और "ए" की पंखुड़ी से बीच से "अमृत",

(g) "ए" और "ऐ" की पंखुड़ी से बीच से "श्रीरवती",

(h) "ओ" और "औ" की पंखुड़ी से बीच से "शिवा",

(I) "औ" और "अं" की पंखुड़ी से बीच से "सीता",

(j) "अं" और "अः" की पंखुड़ी से बीच से "कुमारिका",

14. परम कृपालु परमात्मा का लांछन अर्धचन्द्र है। यह अत्यन्त शीतल, अत्यन्त उज्ज्वल, परम निर्मल, अत्यन्त ओजस्वी, परम तेजस्वी, मन-मोहक, मनआह्लादक, परम सौम्य, अत्यंत प्रभाव-शाली, महापुण्यवान, परम सौभाग्यशाली, स्व-पर को सुखदायी और महा मंगलकारी है। ऐसा चन्द्र आता हुआ देखें, फिर इसे नीलपद्म पराग में "हँ" में सबसे नीचे प्रभु के चरणों में विराजित करें, स्थिर करें तत्पश्चात् प्रतिष्ठा करें।

15. अब इस नील षोडशदल पद्म को शान्तचित्त से देखें, निहारें।

16. अब कमल को ब्रह्मरन्ध्र के पास ले जाएँ, उस कमल को आते देखकर सुषुम्ना नाड़ी खोलें, फिर उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ। फिर वज्र नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ, फिर चित्रिणी नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ। फिर ब्रह्मनाड़ी नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र और अनाहत चक्र को स्पर्श करते हुए विशुद्धि चक्र के पास लाकर स्थिर करें और प्रतिष्ठा करें।

17. इस चक्र का स्थान कंठ पर है। आसमानी रंग के सूर्य जैसा इसका आकार है।

18. यह चक्र अत्यन्त प्रभावशाली है। इस चक्र के ध्यान के प्रभाव से साधक उत्तम वक्ता, काव्य रचना में समर्थ, शान्तचित्त और आरोग्यवान बनता है। यह चक्र बोलता हुआ चक्र है सभी चक्रों को केन्द्रित करके नवसृजन करने की शक्ति रखता है।

19. ऊपर से यह चक्र नीम के वृक्ष से प्रभावित है, इस चक्र में पहुँचने और कमल को स्थिर करने में "हँ" इसकी चाबी रूपी मन्त्र है। श्री काकिनी देवी और शासन देवी श्री ज्वालामालिनी देवी यक्षिणी से अधिष्ठित और अर्धचन्द्र लाँछन युक्त 'श्री चन्द्र-प्रभस्वामी' भगवान इस चक्र के सम्राट हैं। हम प्रभु के लिए एक थाल भरकर मोगरे के फूल लेकर खड़े हैं, और प्रभु को चढ़ा रहे हैं। यह चक्र ऐसे महा प्रभावशाली, परम प्रतापी, परम सौम्य और अत्यन्त पवित्र प्रभु से एवं आकाश तत्त्व से प्रभावित है। इस चक्र की आराधना से शुभ अन्तः-स्फुरणाएँ होती हैं।

20. आकाश का कार्य सबको समाहित करने का होता है, उसी प्रकार इस चक्र के प्रभाव वाला साधक अच्छी-बुरी, सुख-दुःख की सभी बातें अपने मन में समा लेता है, किसी से नहीं कहता, अर्थात् वह गम्भीर होता है और कान का कच्चा नहीं होता।

21. अवकाश में प्रत्यायन करने की एक शक्ति होती है जिससे सम्पूर्ण विश्व में सन्देश व्यवहार होता है, इस चक्र के प्रभाव से मन की तीव्र शक्ति से साधक अन्य को अपने सन्देश पहुँचा सकता है। वचन की शक्ति से वचन सिद्धि मिलती है, काया की शक्ति से दूसरों को मात्र इशारे से सब कुछ समझा सकता है।

22. विशुद्धि अर्थात् जिससे मन, वचन और काया सुविशुद्ध और पवित्र बने।

23. विशुद्धि चक्र सृजनशक्ति, अभिव्यक्ति, शब्द-तत्त्व, प्रत्यायन क्रियाओं या आभार व्यक्त करने का केन्द्र है और अधिभौतिक स्तर है।

24. यदि यह चक्र सम्यक् तरीके से प्रभावी हो तो साधक सुन्दर तरीके से नवसृजन करने में समर्थ बनता है। प्रत्यायन जैसी क्रिया, शब्दतत्त्व, वाक् तत्त्व के साथ सम्बन्ध रखता है, शुभ अन्तः-स्फुरणा, स्व-अभिव्यक्ति का सुचारु संचालन, वक्तृत्व कला में कुशलता, सत्य बोलने-सुनने की इच्छा वाला बनता है। गला, फेफड़ा, हाथ, पाचन-तन्त्र और थाइरॉइड ग्रन्थि काबू में रखकर काया को स्वस्थ रखता है। साधक सदैव दूसरों का आभार और गुणों की अभिव्यक्ति करते हुए सुख में मग्न बनता है। परम पवित्र आचारवान बनते हुए सुन्दर गुणों का स्वामी बनता है।

25. यदि यह चक्र नियन्त्रित न हो तो व्यसनी, खराब आदत वाला, चोरी आदि करने वाला बनता है। वात, पित्त, कफ, खांसी आदि बढ़ती है, सदैव दुःख भरी और खराब बातें करता है, दुःखों के सागर में डूबा रहता है। पापप्रवृत्ति में अपनी सृजनशक्ति का दुरुपयोग करते हुए दुर्गति प्राप्त करता है। असभ्य, अविवेकी और असत्य वचन बोलकर लोगों को अपना दुश्मन बनाकर सामने से दुःखों का स्वागत करता है, इसलिए इस चक्र को काबू में रखना जरूरी है।

26. इस चक्र को नियंत्रित करने के लिए 'आस्रव' की भावना सतत करते रहना चाहिए, जिससे सागर जैसा अपरिमित संसार परिमित बने, मन प्रफुल्लित बने, सुख का भोग मिले उच्चतम कक्षा की समाधि मिले।

27. फिर इस चक्र को निहारते हुए इस चक्र के मूल मन्त्र "अर्हं नमः" का जाप करते हुए चेतना को सभी नाड़ियों से बाहर निकालें। फिर ब्रह्म नाड़ी, चित्रिणी नाड़ी, वज्र नाड़ी और सुषुम्ना नाड़ी को बन्द करते हुए अशोक वृक्ष के नीचे आकर शान्त चित्त होकर सरोवर का अवलोकन करें। फिर "ॐ शान्ति" तीन बार बोलकर दोनों हाथ मसल-कर आँखों पर लगाएँ और पूरे शरीर पर हाथ फेरते हुए धीरे-धीरे आँखें खोलें।

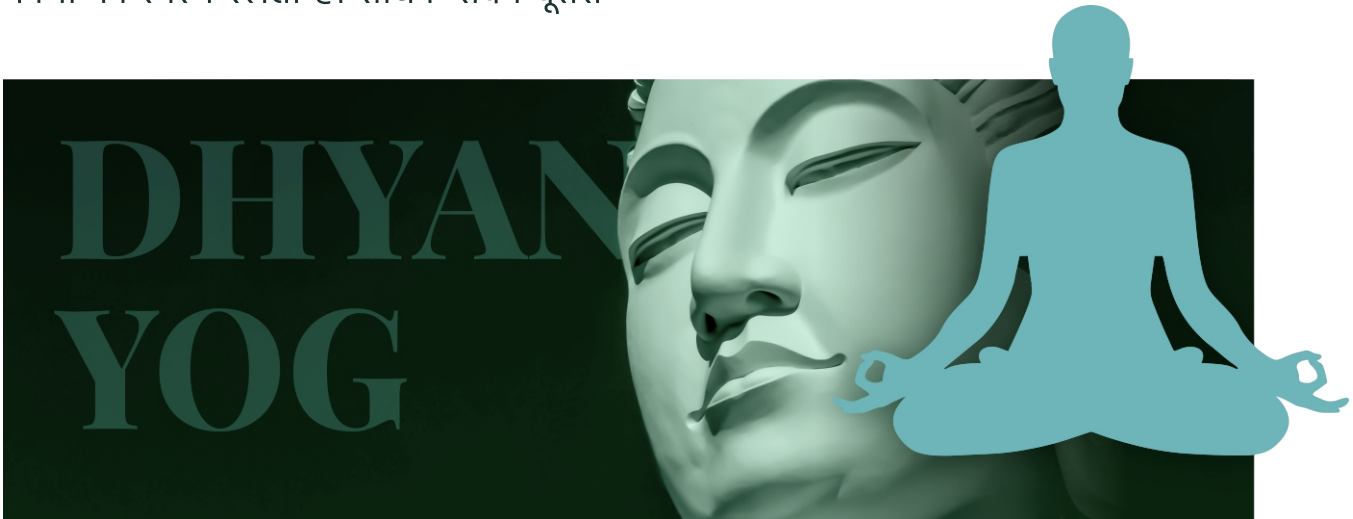

सोशियल मिडीया पर शासन निंदा

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

आज से वर्षों पहले यदि किसी व्यक्ति को विरोध करने का ज़ुनून सवार हो जाता था, तो वह गुमनाम बनें अपनी अन्तर्व्यथा रूप पत्रिकाएँ छपवाकर उनके गट्ठे व्याख्यान सभा, देहरासर के चौराहें या जाहिर कार्यक्रम के स्थलों पर छोड़कर चला जाता था।

लेकिन...

ऐसे काम भी सभी के बस के नहीं होते थे, हर कोई ऐसा नहीं कर पाता था। किसी के लिए भय... तो किसी के शर्म रुकावट बनकर रास्ता रोक देती थी।

अब वर्तमान समय में ऐसा हुआ है, कि...

सभी के हाथों में Smart phones आ गए हैं और उसमें भी उन्हें Social media के जरिए open platform मिला है। सभी WhatsApp, Face-book, Instagram, Twitter का उपयोग करने लगे हैं।

लोगों को इनका उपयोग करना चाहिए या नहीं ? इसकी चर्चा करने का या इस पर उपदेश देने का यह समय नहीं है।

क्युँकि इस Social media का व्याप अब बहुत ही बड़ गया है।

सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐति-हासिक, मनोरंजन इत्यादि कई क्षेत्रों के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र भी इस Social media के साथ जुड़ गए हैं।

बहुत बड़ी-बड़ी और सैद्धान्तिक बातें करनेवाले भी स्वयं के पुस्तकों का प्रचार एवं बुकींग WhatsApp से कर रहे हैं (जो कि पहले वह इन सब बातों के कट्टर विरोधी थे)।

Social media हानिकारक ही है ऐसा कहना अर्धसत्य ही सिद्ध होगा, क्योंकि पूरी दुनिया ही Virtual हो रही है, तो "पुराने तरीके ही बेहतर थे" ऐसा आलाप करना अब व्यर्थ होगा।

चक्कु या छुरी से डाकू खून करते हैं। दूसरों के जीवन का नाश करते हैं और उसी प्रकार के चक्कु से डॉक्टर ऑपरेशन करके किसी को जीवन-दान

देते हैं।

जिन सीढ़ियों से चढ़कर चोर चोरी करते हैं, उन्हीं सीढ़ियों का उपयोग कर पुलिस हमारी रक्षा करती है।

अब "चक्कु" को गलत ठहराना या "सीढ़ी" को दोष लगाना इसमें अपनी ही मूर्खता सिद्ध हो सकती है।

ठीक वैसे ही...

इस Social media की ताकत भी ऐसी ही है। यदि इसका गलत उपयोग करेंगे तो शासन की कब्र खोदी जाएगी और अच्छे तरीके से करेंगे तो शासन के अनेक कार्यों का उद्धार सफलता पूर्वक होगा।

जैसे कि; #NoSeaPlaneInShatrunjay (No sea plane in Shatrunjay) के हॅशटॅग के साथ Twitter पर किए गए विरोध को अकल्पनीय और प्रभावशाली प्रतिसाद मिला और शासन के कार्य को सफलता मिली।

इसलिए यह Social media गलत है यह कहना अर्धसत्य ही है।

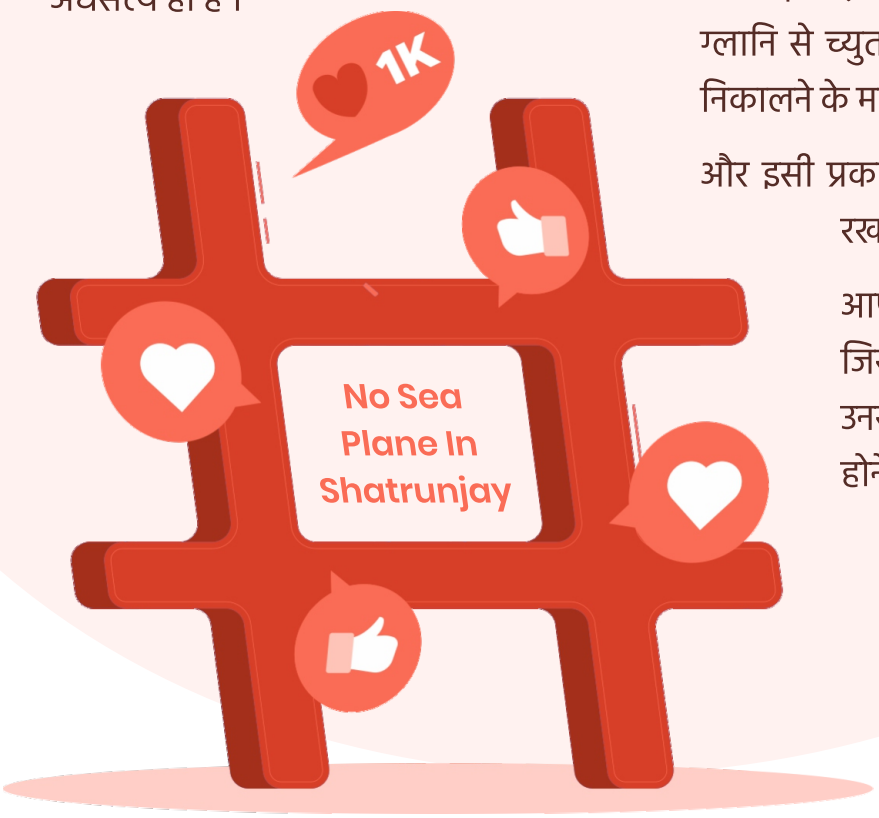

लेकिन...

बदनसीबी की बात यह है, कि...

जैसे वैज्ञानिकों ने की हुई अनेकानेक खोजों का विश्व के देशों द्वारा उपयोग करने के अलावा जिस प्रकार दुरुपयोग किया है,

ठीक उसी प्रकार Social media का भी दुरुपयोग किया जा रहा है।

राजकीय, राष्ट्रीय, सांसारिक, सामाजिक क्षेत्र में इसका दुरुपयोग हुआ है।

हर कोई मन चाहे वैसे Messages बना-बनाकर Forward करता है, कोई Images बनाता है तो कोई Videos बनाता है। सभी अपने आपको क्रान्तिकारी मान रहा है, जैसे कि; सम्प्रति राजा, कुमारपाल, वस्तुपाल, पेथडशा इत्यादियों से भी उत्कृष्ट शासन-रक्षक हैं, इस भ्रम के साथ ये लोग निम्नकक्षा की भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी दिल की भड़ास Social media पर निकालते रहते हैं।

भगवान महावीर के समय से लेकर अभी तक जब भी कोई प्रश्न उपस्थित हुए अथवा धर्मानुशासन ग्लानि से च्युत हुआ तो क्या इसी प्रकार भड़ास निकालने के मार्गों को अपनाया गया था?

और इसी प्रकार शासन की बातों को खुलेआम रखना कहाँ का अनुशासन है?

आप Social media में इन बातों को जिस प्रकार से प्रस्तुत कर रहे हो क्या उनसे आपके प्रश्नों का निराकरण होनेवाला है?

बातें करने वाले बातें ही करते रहेंगे... निन्दकों का काम निन्दा करना ही होता है।

लेकिन इससे धर्म के विरोधियों को ही मसाला मिलेगा । जो ताली बजाने वाले थे उनको और मजा आ जाएगा लेकिन समस्याओं के समाधान के नाम पर कुछ हासिल नहीं होगा ।

रही बात Social media की, तो यहाँ पर सभी लोक समझदार नहीं होते हैं ।

इसलिए, जिन लोगों की प्रभु के शासन पर श्रद्धा है और जिनके हृदय में यह शासन वास करता है, उन्हें शासन से सम्बन्धित समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान हो उसके लिए प्रयत्न करने चाहिए ।

झूठमूठ से Social media पर stunt करने से कुछ नहीं हासिल होनेवाला ।

अपने प्रश्नों का निश्चित और स्थायी समाधान प्राप्त करने के लिए...

1) जो-जो चर्चा करने योग्य प्रश्न यदि किसी व्यक्ति से सम्बन्धित हैं, तो केवल उसी के साथ directly बात करके उन्हें solve करने का प्रयत्न करें !

2) स्वयं अपने हाथों से उन्हें आपके प्रश्नों की कॉपी पहुँचाएँ !

3) यदि उनसे आपके प्रश्नों का समाधान न होता हो, तो उससे होनेवाले नुकसान की जानकारी सम्बन्धित व्यक्ति को दें !

4) अधिकारी-पदासीन व्यक्ति सिवाय अन्य लोगों के साथ चर्चा कर अपना समय बर्बाद ना करें, साथ ही आपके प्रश्नों को चर्चा का विषय न बनाएँ !

5) पूछताछ या चर्चा में आपके द्वारा संयम और आदर-औचित्य का पालन हो, इसका विशेष ध्यान रखें !

6) आपके सभी प्रयत्न विफल हो जाएँ तो शासन-अनुरागी तथा स्वभाव से गम्भीर हों ऐसे पूज्य गुरु भगवन्तों के साथ निजी तौर पर चर्चा करें !

7) आपके प्रश्नों के समाधान प्राप्ति में भी शासन कलंकित न हो, इसके लिए सतर्क रहें । इसे ध्यान में रखते हुए अन्य लोगों को विषय-वस्तु की जानकारी दिए बिना ही अपने कार्य को पूर्ण करें !

8) अपने प्रश्नों के निराकरण में अहंकार को केन्द्र-बिंदु बनाकर हार-जीत या मान-अपमान का मुद्दा न बनाएँ! इससे आपकी समस्याओं का निराकरण गौण होकर शासन एवं संघ की मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा पर आँच आ सकती है ।

9) शिशु अपने माँ के गर्भ में से बाहर आने के लिए भी 9 महिनों की प्रतिक्षा करता है..., इस पर गौर करें ! सभी समस्याएँ एक जैसी तो नहीं होती, कुछ सामान्य तो कुछ जटिल होती हैं । अतः उनके निराकरण के लिए भी यथोचित समय तो लगेगा ही, तो कृपा करके तब तक अपना धैर्य एवं संयम बनाए रखें !

Last Seen : अस्तु... !

हे प्रभु ! मेरे हृदय में शासन के प्रेम की आग ज्वाला बनकर भड़क उठे... किन्तु उससे तेरे शासन को यत्किंचित् भी नुकसान न हो... यही मेरी प्रार्थना है ।

नमस्कार अणगार को...

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

नमस्ते मित्रों !

Faithbook के जरीए हम अरिहंत बनने की यात्रा में अग्रसर हो रहे हैं । दुनिया भर की और सभी पदवीयाँ, संपत्ति से, मेहनत से, बुद्धि से अर्जित की जाती है । परंतु यह 'अरिहंत' पदवी यूं देखे तो बड़ी सरलता से और यूं देखे तो बड़ी ही मेहनत से पाई जा सकती है । वहां बाहरी विश्व में तनिक भी मेहनत न की जाए, तो भी चल जाए, किंतु भीतरी विश्व में कठिन से कठिन मेहनत करनी जरूरी है । वह मेहनत हैं मन में शुभ भावनाओं को भरने की, और अशुभ भावनाओं को हरा देने की । और वाकई में यहीं मेहनत सबसे बड़ी challengeable है । क्योंकि हमारा मन सही कम, गलत ज्यादा ही सोचता रहता है, और फिर हमारा मन हमारे बस में भी कहां है ? हम सोचना चाहते हैं कुछ, पर मन कुछ अलग ही बात सोच लेता है । इसीलिए तो मित्रों ! 'अरिहंत' बनना बड़ा मुश्किल है । एनाकोंडा जैसे कातिलों को बस में लेना फिर भी आसान है, मन को बस में लेना उससे भी कई गुना ज्यादा मुश्किल है । पर जिस महान व्यक्ति ने एक बार अपने मन को वश में कर लिया, अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया, फिर उसके लिए 'अरिहंत' बनना तनिक भी मुश्किल नहीं है ।

....तो आज हम ऐसे महान व्यक्तियों के बारे में जानेंगे, जिन्होंने अपने मन को वश में ले रखा है । इसीलिए हम उनकी पूजा करते हैं, भक्ति करते हैं, उन्हें गोचरी का लाभ ले कर अपने आप को धन्य महसूस करते हैं ।

हां, वह है हमारे पूजनीय साधु भगवंत । मन उनकी मुट्ठी में है, इसीलिए जिस कठोर चर्या, एकाकी जीवन, न मोबाइल, न इंटरनेट, न फेस-बुक, न चैट, न घूमना फिरना, न खाना-पीना... यह सब चीजें जो हमारे लिए प्रसन्न होने के लिए, फ्रेश होने के लिए अहमियत रखते हैं, वो सब बातों से जोजनों दूर होने पर भी आश्चर्य की बात है कि, उनके चेहरे पर हम संसारीयों के चेहरे से भी ज्यादा प्रसन्नता झिलमिलाती है । क्योंकि हम मन के दास है, और वह मन के मालिक ।

साधु जीवन क्यां ?
1) जहाँ पर वस्तुओ का अभाव हो, औऱ
2) जहाँ पर मस्त स्वभाव हो ।

इन साधु भगवंतों की सेवा से, उपासना से, उनके प्रति आंतरिक बहुमान और श्रद्धा का भाव रखने से हम अरिहंत बन सकते है । उन्होंने मन मकड़े को वश में लिया है, औऱ उनकी भक्ति हमारे मर्कट मन को वश में लेने में सहायक है ।

साधु भगवंत आखिर करते क्यां है ? साधु भगवंत स्वाध्याय करते है, साधना करते है, सहाय करते है, सेवा करते है, साधुता का पालन करते है ।

जिनशासन के साधु भगवंत एक ऐसी शख्सियत है, जो आपको पूरे विश्व मे और कहीं भी देखने को न मिलेगी, साधु भगवंत बोलकर नहीं, परंतु मौन रहकर, और इशारों के द्वारा नसीयत देते हैं।

शालीभद्र शेठ ने इतनी ऋद्धि पाई, साधु भगवंत को दान देने से, धन्नाजी ने इतना धन पाया, साधु भगवंत को दान देने से, कयवन्ना शेठ ने इतना सौभाग्य पाया, साधु भगवंत को दान देने से, आदीश्वर भगवान और महावीरस्वामी भगवान ने सम्यक्त्व की प्राप्ति की साधु भगवंत को दान देने से, और रेवती श्राविका ने अरिहंत की पदवी पाई, साधु भगवंत को दान देने से।

मकड़ी अपने आस-पास जाल बनाती है, पर उसमें फंसती नहीं, रेशम का कीड़ा अपने आस पास जाल बनाता है और उसमें फंसता भी है। हम संसारी और साधु में इतना ही फर्क है कि, हम संसार में रहते है, और सांसारिक मायाजाल में फंस जाते है, जब कि साधु भगवंत संसार में है- मोक्ष में तो नहीं पहुंचे अभी, परन्तु वे सांसारिक मायाजाल से परे है।

चलो, हम सब भी उस साधु पद का गीत गुन-गुनाएं।

।। साधु पद ।।

(तर्ज: अखियों के झरोखे से...)

साधना आपकी है कडी, जो तोड़े कर्मों की लड़ी,
ओ साधु भगवंतो ! मेरे वंदन लाखो हो...

उत्तम उन्नत और उच्च है, साधु भगवंतो का जीवन ;
संसार के बीहड़ वन में, हँसता खिलता गुलशन ;
इस साधुता को आपकी,
शिवसुख मुनासिब हो... ओ साधु...

नहीं देखा सिद्धों के सुख को, पर लगता ऐसा हैं ;
जो आप के मुख पर दिखा, मोक्ष में भी बस वैसा है ;
दुःख चिंता के सागर में डूबे,
हमें आप सहारा हो... ओ साधु...

आप मौन हंमेशा रहते हो, नहीं देते हो उपदेश ;
पर आपकी तपस्या से, मिलता मुक्ति का संदेश ;
पामर को परमात्मा बना देते,
आप ऐसे अजूबा हो... ओ साधु...

जिसको पुष्ट किया, वो ही हमें पीस रहा हैं।

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

सुबह पति जब तैयार होकर घर से बहार निकल रहा था, तब अंदर से उनकी श्रीमतीजी (पत्नी) आयी, उनके हाथ में केशर-बादाम-पीस्तावाला दुध रखा और पत्नी ने कहा "आप यह दुध पीकर ही जाना" पति को कुछ शंका हुई अतः पुछा "लेकिन क्यों ?"

श्रीमती ने कहा, "मैं कह रही हुं इसलिए पीकर जाओ"

पति - नहीं ! पहले ये बताओ क्यों "

श्रीमती - आज नागपंचमी हैं, पूरे शहर में नाग को ढूंढने कहाँ जाऊँ ? इसलिए मैंने आपको...

सिर्फ नागपंचमी के दिन ही नहीं, परंतु इंसान हर रोज नाग को दुध पिलाता है और यह नाग है - हमारे भीतर रहे दोष...

जिसके द्वारा भीतर रहे हुए दोष बहुत ही प्रबल बने ऐसी चेष्टा करना - यही तो है सर्प को दुध पिलाने जैसी चेष्टा ...

सर्प को दुध पिलाने से उसके अंदर रहे हुए विष (ज़हर) की भी वृद्धि होने वाली है।

एक तो मन में वासना है और उसके बावजूद भी टी.वी., मोबाइल में नारी दर्शन करना...

एक तो मन में क्रोध की आग है और उसके बावजूद भी हिंसक दृश्यों को देखना...

एक तो मन में लोभ का सागर है और उसके बावजूद भी जो नई-नई वस्तुएं दिखाई दी उसे, प्राप्त करने की इच्छा...

एक तो मन में आहार संज्ञा की लालसा है और उसके बावजूद भी नई-नई होटल, नई-नई डिश, चाहे अभक्ष्य हो या अपथ्य, सभी खाने की लालसा...

एक तो मन में अभिमान का पर्वत है और उसके बावजूद बात-बात में 'मैं' और 'मेरा' का ही रटण...

बहुत ही भयंकर है यह नागपंचमी !

जिस नाग को हमने दुध पिलाकर पुष्ट किया, वही नाग हमें डंश देगा, हमारे शरीर में विष फेलेगा, हम स्वयं तड़प-तड़प कर मरेंगे तब हमें हमारी भूल का अहसास होगा, परंतु तब तक सारी बाजी हमारे हाथ से निकल गई होगी।

रात दिन मजदूरी कर करके, टेंशन ले लेकर, वर्षों के बाद जो धन इकट्ठा किया, इस धन का उपयोग किस में करेंगे ? विष पीने में ? सर्प को पालने में ? जिससे हमें दुःख प्राप्त होनेवाला है उसमें ?

होटल-सिनेमा-फैशन-व्यसन-टी.वी.-मोबाइल इस सब का उपयोग, हैवी डाईबीटीस में गुलाब-जामुन खाने के समान है।

चलो संकल्प करें : जो मुझे परेशान करने वाले है एवं दुःखी करने वाले तत्त्व है, उनसे तो मैं दूर ही रहुँगा, उन्हें पुष्ट नहीं करुँगा।

Temper : A Terror – 5

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(पाटलिपुत्र आने के बाद नगर के प्रवेश के पूर्व एक भव्य प्रासाद को देखकर उस में प्रवेश कर किया। उस मंदिर के खंभे पर चित्र में अंकित स्त्री को देखकर अमर अत्यंत मोहित हो गया और उसे पाने के लिए वियोगभाव से तड़प रहा था। उसके बाद क्या हुआ आगे पढ़िए...)

अत्यन्त मधुर एवं स्नेहयुक्त ऐसे अमृतमय स्वर में किसी श्रेष्ठी ने पूछा,

"अरे मित्रों ! आप इस प्रकार क्युँ प्रलाप कर रहे हो ?"

श्रेष्ठी की इतने मधुर वचनों का श्रवण कर उन्हें ऐसा प्रतित हुआ कि जैसे कोई देवता ही करुणा भाव से हमारी समस्या का निवारण करने आए हैं। उन्होंने उस आवाज की दिशा में दृष्टिक्षेप किया। पीले रंग की धोती एवं रक्तवर्णी अंगवस्त्रों से सुशोभित एक ऋद्धिमान व्यक्तित्व उन्हें दृष्टिगोचर हुआ।

उस श्रेष्ठी का तेजोमय मुख देखकर मित्रानन्द को उसके ऊपर तुरन्त विश्वास हुआ। अपने मन को शान्त करते हुए मित्रानन्द ने श्रेष्ठी को इतिवृत्त कह दिया, श्रेष्ठी ने एकाग्रचित्त होकर उसे सुना। "अब मेरा मित्र यहाँ से निकलने के लिए तैयार ही नहीं है। हे श्रेष्ठीवर्य ! कृपा करके अब आप ही इस समस्या का निवारण किजीए !" मित्रानन्द श्रेष्ठी को हाथ जोड़ते हुए प्रार्थना कि।

विचार में तल्लिन श्रेष्ठी ने अमर की ओर देखते हुए

कहा, "इसका प्रेमराग देखकर तो ऐसा ही लगता है कि कुछ क्षण के लिए भी यदि यह इस स्थान से वंचित हो जाएगा, तो इसके प्राण शरीर का त्याग कर देंगे। इस चित्र में चित्रित यह स्त्री सत्य है या कल्पना यह तो मैं नहीं जानता किन्तु यह अवश्य जानता हूँ कि इस प्रासाद का निर्माण शूरदेव ने किया है।"

"शूरदेव...! शूरदेव कहाँ रहता है ?" मित्रानन्द ने प्रश्नार्थक मुद्रा में किसी अज्ञात मार्ग की ओर इंगित करते हुए पुनः प्रश्न किया।

"सोपारक...!"

सोपारक नाम सुनते ही एक अस्पष्टसी आकृति मित्रानन्द के मस्तिष्क में रूप लेने लगी।

जिस प्रकार चन्द्रमा के वियोग में चकोर की अवस्था होती है उसी प्रकार की पीड़ा के अनुभव से अमर का हृदय विदीर्ण हो रहा था। दूसरी ओर मित्रानन्द अपने मित्र के कष्ट निवारण हेतु सोपारक की खोज के लिए निकलने की तैयारी कर रहा था।

"रत्नसार श्रेष्ठी ! आपने हमें मार्ग दिखाकर बहुत बड़ा उपकार किया है। बस... आपको मेरी..."

मित्रानन्द आगे कुछ कह नहीं पा रहा था, न जाने उसके शब्द जैसे उसके कण्ठ में भावविभोर होकर रुदन कर रहे थे, फिर भी बड़ी मुश्किल से वह आगे कहता है।

"बस... आपसे मेरी एक विनती है कि आपने इतनी सहायता की ही है। अब जब तक मैं वापस न आ जाऊँ, कृपा कर आप मेरे प्राणप्रिय मित्र की देखभाल करें ! मैं वहाँ जाकर सूत्रकार शूरदेव से इस मूरत के रहस्य को जान लेता हूँ। यदि तत्पश्चात् शक्य हो जाए तो..." मित्रानन्द के मुख पर एक सकारात्मक कल्पना उभरती दिखाई दे रही थी। "तो इस रूपांगना के साथ मेरे मित्र का मिलन करवा दूँगा। कहिए श्रेष्ठी ! आप मेरे मित्र का ध्यान तो रखेंगे ना ?" प्रश्नार्थक नजरों से मित्रानन्द ने श्रेष्ठी की ओर देखा।

"मित्रानन्द आप यत्किंचित् भी चिन्ता ना करें ! आपके मित्र को मैं एक खरोच भी नहीं आने दूँगा। लेकिन अभी आप शीघ्रता से प्रयाण करें ! शुभं भवतु ! कल्याणं भवतु !" मित्रानन्द अब निश्चिंत हुआ था।

मित्रानन्द ने अपने साथ लेकर जाने के लिये आवश्यक सामग्री सज्ज की। उसमें रत्नसार श्रेष्ठी के पास से लिया हुआ हीरे-माणिक से सुशोभित एक अंगवस्त्र और धोती भी समाविष्ट थी।

"कहीं पर तो काम आएगी।" ऐसा विचार करते हुए मित्रानन्द ने उसे अपने साथ ले लिया था।

"तो अमर ! मेरे मित्र..." मित्रानन्द ने अमर की ओर दृष्टिक्षेप किया, अभी भी अमर की आँखों से अश्रुधाराएँ थमने का नाम नहीं ले रही थी।

"अमर ! तुम चिन्ता मत करो, मैं शीघ्रातिशीघ्र लौट आऊँगा !" मित्रानन्द ने अमर को आश्वासित करते हुए कहा।

"जो तुझे कुछ हो गया है..., ऐसा मेरे सुनने में आएगा तो मेरे प्राण ही..." मित्रानन्द ने तुरन्त अमर के मुँह पर अपना हाथ रख दिया।

"जाते समय शुभ-शुभ बोल अमर...! मैं तुझे वचन देता हूँ कि मैं दो महिनों के अन्दर आ जाऊँगा... नहीं तो मैं हमारी..." मित्रानन्द उसके आगे कुछ कह नहीं सका।

"अमर के मनोरथ पूर्ण हों...! उसके मन की अभिलाषा ही शुभ भावी में प्राप्त हो...!" प्रभु से ऐसी प्रार्थना करते हुए मित्रानन्द ने वहाँ से प्रयाण किया।

चम्पा की महक का विस्मरण हो जाए ऐसी अप्रतिम सुगंध सोपारक नगरी में से प्रसरित हो रही थी। अंतिम कितने वर्षों से व्यापार और कलाकृतियों में सोपारक नगर अग्रिम स्थान पर पहुँच गया था।

मित्रानन्द सोपारक नगरी की यह अद्भुत सुन्दरता देखने में तल्लीन हो गया था। इस नगरी के लिए सुना बहुत था किन्तु प्रत्यक्ष देखने की यह अनुभूति ही अनोखी थी। अब मित्रानन्द को अपनी थकान उतारने के लिए विश्राम की आवश्यकता थी। वह सोपारक नगर के प्रांगन में स्थित देवकुल में गया। दोपहर का समय होने के कारण देवकुल में कोई भी नहीं था।

कोयल की टहुकार से वातावरण प्रसन्न लग रहा था। अपने सामान-सामग्री को एक कोने में रखकर मित्रानन्द ने देवकुल के आंगन में स्थित कुए के शीतल जल से हाथ-पैर धो लिए, जिससे अब उसकी थकान उतरते हुए ताजगी का एहसास हो रहा था।

भोजन का समय हो ही गया था। मित्रानन्द ने देवकुल में रखी हुई अपनी थैली निकाली जिसमें आते समय जंगल से लाए हुए फल थें, वह उनका सेवन करने लगा। "आहाहा...! कितने मधुर एवं स्वादिष्ट हैं ये फल... भूख से त्रस्त जीव के लिए जैसे अमृत ही... शक्कर की मिठास भी इनकी मधुरता के सामने फिकी पड़ जाए। वाह... आनन्द आ गया।"

भोजन का यथोचित आनन्द लेकर देवकुल की बाजु में स्थित झील का शीतल जल-पान कर अपनी आत्मा को मानो मित्रानन्द ने तृप्त कर लिया था। हवा के शीतल, मन्द बह रहे झोकों से मित्रानन्द की आँख कब लग गई वह उसे भी पता नहीं चला।

"ॐ... ॐ... ॐ..." ॐकार की गुँजते हुए नाद से उसकी आँखे खुल गई। ॐकार के मंत्रजाप के साथ वहाँ का पूजारी मन्दिर की साफ-सफाई कर रहा था।

आकाश की ओर देखते हुए मित्रानन्द अब निन्द में से जगकर खड़ा हो गया था। वातावरण को देखते हुए उसे इस बात की एहसास हो गया की निन्द में उसका बहुत सारा समय व्यतित हो गया है। पूजारी के निकट जाकर वह उससे वार्तालाप करने का प्रयोजन कर रहा था।

"राम राम पूजारीजी! मुझे एक सूत्रकार से मिलना है।"

"तुम्हें...?" मित्रानन्द की बात को बीच में ही काटते हुए पूजारी ने प्रतिप्रश्न किया।

"क्या नाम है उस सूत्रकार का जिसे तुम मिलना चाहते हो?"

"शूरदेव।" मित्रानन्द ने कहा।

"अच्छा! शूरदेव। हाँ... वह तो इसी गाँव में रहता है... किन्तु वो तो तेरे जैसे भिखारीयों की ओर एक कटाक्ष भी न करे... उसे तो बस बड़े बड़े श्रेष्ठी, धनिकों से ही सम्बन्ध होता है।" इतना कहते हुए वह अपनी पूजा में तल्लिन हो गया।

उसकी बातें सुनकर मित्रानन्द के मुख पर एक अनोखा स्मित झलक रहा था।

उन्मत्त सांड जैसे दो विशालकाय कुत्ते सूत्रकार के घर के बाहर सोए हुए थे। एक अनजान व्यक्ति को देखते ही वे अत्यन्त कर्णकर्कश आवाज में जोरशोर से भौंखने लगे, उनकी आवाज से मानो कान के पर्दे ही फट जाएँ।

कुत्तों के भौंखने का कारण जानने हेतु सूत्रकार शुरदेव घर में से बाहर आ गया।

"अरे रे... बस भी करो ! हुआ क्या है तुम दोनों को ?" ऐसा कहते हुए उसने उन दोनों को पास लेकर उन्हें प्यार से दुलारा । इतने में उसका ध्यान सामने खड़े हुए उस व्यक्ति पर गया जिसे देखकर उसके कुत्तों ने इतना शोर मचाया था । उस व्यक्ति को देखते ही उसकी आँखे खुली की खुली रह गई । हीरे-माणिक जडित वस्त्रों से सुशोभित उस व्यक्ति के स्वागत के लिए शूरदेव उत्सुक था ।

"अरे हट् हट्... अब हटो भी... बस भी करो...!" ऐसा कहते हुए शूरदेव ने कुत्तों को वहाँ से दूर करवाया।

"आएँ, पधारें महोदय...! इस गरीब की कुटिया आपके चरणकमलों से पवित्र करें ।"

"आपका नाम क्या है ? कहाँ से आए हैं आप ?" आकर्षक व्यक्तित्व के मित्रानन्द को आमन्त्रित करते हुए शूरदेव ने प्रश्न किए ।

"हम अमरपुर से आए हैं... मित्रानन्द नाम है हमारा... एक मन्दिर बनाने की मनिषा है हमारी... आपका नाम..."

"अरे महाशय...! आप बाहर क्युँ खड़े हैं ? भीतर आने का तो कष्ट करें... आपके चरणरजों से इस गरीब की कुटिया पवित्र करें...!" मित्रानन्द की बात को बीच में ही काटते हुए शूरदेव उसे घर के अन्दर लेकर चला गया ।

"कृपया आप यहाँ विराजमान हो जाएँ... तब तक मैं आपके लिए कुछ खाने-पीने का प्रबन्ध करके आता हूँ ।" ऐसा कहते हुए शूरदेव अतिथि सत्कार हेतु व्यवस्था करने के लिए निकल गया ।

मित्रानन्द बैठे बैठे ही घर के चारों ओर अपनी नजर दौड़ा रहा था । उस घर का अद्भुत सौन्दर्य देखकर ऐसा प्रतित हो रहा था कि जैसे स्वयं विश्वकर्मा ने

अपने हाथों से इस घर की रचना की हो । अत्यन्त सुन्दर नक्षीकला को देखते हुए मित्रानन्द अचंबित हो गया था ।

इतने में शूरदेव स्वयं अपने हाथों में खान-पान के लिए बहुत से मिष्ठान्न लेकर आता है । शाम हो गई थी और मित्रानन्द वैसे भी भूख से अत्यन्त व्याकुल हो गया था । देवांगनाओं जैसी सुन्दर कलाकृति से नक्षीकृत पाट पर सभी मिष्ठान्न रखे गए ।

"यह इतना सब-कुछ किसके लिए ?" शूरदेव की ओर अत्यंत आश्चर्य से देखते हुए मित्रानन्द ने पूछा।

"यह सब आपके लिए ही है श्रीमान्...! आप हमारे अतिथि हैं। और..." बात करते करते शूरदेव नीचे मित्रानन्द के सामने बैठ गया।

"अच्छा ! तो आप क्या कह रहे थे... कि आपको एक मन्दिर..." फिर दोनों के बीच में बहुत देर तक चर्चा चली। मित्रानन्द अनेकानेक मिठाईयों का स्वाद लेते हुए बाते कर रहा था। सुखडी का पूरा पात्र उसने बातों ही बातों में खाली कर दिया था।

"क्षमा किजीए किन्तु हम अमरपुर के लोगों का महल और हृदय दोनों ही विशाल होते हैं..." ऐसा कहते हुए मित्रानन्द ने सुखडी के पात्र की ओर संकेत किया।

"किन्तु यदि हमें आपका कलाविष्कार देखना है तो उसे कहाँ देख सकते हैं ? क्या आपके द्वारा निर्मित कोई स्थापत्यकला या वास्तु इस नगर में है ?"

"जी नहीं...!" शूरदेव ने कहा। "ज्यां उगत सैं, त्यां बेचत न जाइं... इस उक्ति के अनुसार अपने ही लोगों में हमें कहाँ आदरातिथ्य या सम्मान प्राप्त होगा। किन्तु..." कुछ स्मरण करते हुए शूरदेव ने आगे कहा, "आपने कभी पाटलीपुत्र के दर्शन किए हैं ?"

"हाँ... हाँ..."

"वहाँ गाँव के बाहर रत्नसार श्रेष्ठी का मन्दिर देखा है ?" शूरदेव ने पुनः प्रश्न किया।

विचाराधिन मुद्रा में हाव-भाव करते हुए मित्रानन्द ने कहा, "हाँ... उसमें एक अप्रतिम मूरत..."

"हाँ... हाँ... एकदम सही... वही है... वही है..." हर्षोल्लास के साथ शूरदेव के मुख से उद्गार निकले।

"अरे वाह...! अप्रतिम कलाकृति है... अत्यन्त सुन्दर रचना है वह मूरत... किन्तु उसे देखने के पश्चात् से हम दुविधा में हैं। हम इसका निर्णय ही नहीं कर पा रहे हैं कि वह मूरत वास्तविक है या मात्र कल्पना..."

"अरे नहीं... कोई कल्पना नहीं है... सत्य ही है..." शूरदेव ने अत्यन्त आवेश के साथ कहा।

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम् ।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160